उत्तमङ्गचरियविरचितो

चन्दसुरियगतिदीपनी

देवनागरी संस्करण

सम्पादक

उज्ज्वल कुमार*

भूमिका

पालि में ब्रह्माण्ड और उससे सम्बन्धित विषयों का उल्लेख तिपिटक और उसके आनुषङ्गिक साहित्य में हुआ है। इस विषय पर स्वतंत्र रूप से ग्रन्थ रचना का कार्य 11वीं -12वीं शताब्दी के बाद भारत के बाहर दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों, विशेषकर बर्मा, थाईलैंड, कम्बोडिया आदि में शुरु हुआ और जो अनवरत रूप से जारी है। इन देशों में ब्रह्माण्ड सम्बन्धी विषयों का प्रयोग बौद्ध धर्म के कई पहलुओं जैसे वास्तुकला, पौराणिक कथा, भित्ति चित्र, ज्योतिष आदि के लिए किया जाता रहा है। फिर भी आधुनिक पालि अध्ययन के क्षेत्र में ब्रह्माण्डीय साहित्य एक स्वतंत्र विषय के रूप में विद्वानों को आकर्षित करने में सफल नहीं हुआ। यही कारण है कि पालि में अब-तक कितने ब्रह्माण्डीय ग्रन्थ हैं इसका भी कोई लेखा-जोखा नहीं है। वर्तमान में उपलब्ध पालि इतिहास के ग्रन्थों में इस विषय पर कुछ खास चर्चा नहीं हुई है। प्रस्तुत कार्य का उद्देश्य **चन्दसुरियगतिदीपनी** का एक आलोचनात्मक संस्करण देवनागरी लिपि में उपलब्ध कराना है तथा इस ग्रन्थ का एक संक्षिप्त विवरण भी प्रस्तुत करना है।

पालि ब्रह्माण्डीय ग्रन्थ

प्राप्त जानकारी के अनुसार विशेषकर बर्मा एवं थाईलैंड में रचित पालि में निम्नलिखित ब्रह्माण्डीय ग्रन्थ प्राप्त होते हैं - 1. **लोकपञ्ञत्ति**, 2. **लोकुप्पत्ति, 3.**

---

* एसोसिएट प्रोफेसर, बौद्ध अध्ययन विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता।

अरुणवतीसुत्त, 4. छगतिदीपनी, 5. लोकप्पदीपकसार, 6. चक्कवाळदीपनी, 7. लोकदीपनी, 8. लोकजोतिका/लोकसण्ठानजोतरतनगण्ठि, 9. ओकासलोकदीपनी, 10. महाकप्पलोकसण्ठानपञ्ञत्ति, 11. पञ्चगतिदीपनी। इनमें से कुछ ग्रन्थों (जैसे, पञ्चगतिदीपनी, अरुणवतीसुत्त आदि) का टीका अथवा अट्ठकथा भी मिलता हैं। इसके अतिरिक्त हमें बर्मी परम्परा से प्राप्त होने वाले खगोल शास्त्र से संबंधित ग्रन्थ **चन्दसुरियगतिदीपनी** भी मिलता है। आधुनिक पालि साहित्य के इतिहास के ग्रन्थों में **चन्दसुरियगतिदीपनी** का उल्लेख न के बराबर है। मेरी जानकारी में इस ग्रन्थ का न तो रोमन संस्करण उपलब्ध है और न ही देवनागरी। इसका एक थाई संस्करण उपलब्ध है।

साहित्य समीक्षा

चन्दसुरियगतिदीपनी विद्वानों के नजरों से ओझल रहा है। इस ग्रन्थ के बारे में एक संक्षिप्त सूचना देते हुए ओस्कर फोन् हिनूबर (1996: 185) कहते हैं,

> *Candasuriyagatidīpanī* survives only (?) in a transcript prepared by U Bokay in Pagan in 1981. The original manuscript dated AD 1775 was found by him in the delapidated Gaing-ok Kyaung monastery in Pagan, which has disappeared in the meantime.
> चन्दसुरिय 1981 में पगान में यू बोके द्वारा तैयार केवल एक प्रतिलेख में मिलता है। पगान के क्यउग्न के गाईंग-ओक विहार में 1775 ई. की एक मूल पाण्डुलिपि प्राप्त हुई थी जो इस बीच अनुपलब्ध है।

किन्तु इस बीच मुझे **चन्दसुरियगतिदीपनी** की एक पाण्डुलिपि टोरेन्टो विश्वविद्यालय, कनाडा से प्राप्त हुई है। जहाँ तक यू बोके (1981) की बात है तो उन्होंने हस्तलिखित प्रतिलेख पर 16-12-1981 दिनांक अङ्कित किया है तथा ग्रन्थ का शीर्षक **चन्दा-सुरिय-गति-दीपनी** दिया है। यह एक 45 पन्नों का हस्तलिखित प्रतिलेख है जिसमें प्रथम पृष्ठ पर अंग्रेजी भाषा में बोके (1981) पाण्डुलिपि के बारे में सूचना देते हैं और पृष्ठ संख्या 1-44 में पालि पाठ रोमन लिपि के बड़े-अक्षरों (Capital Letters) में लिप्यन्तरण करते हैं। बोके (1981) हस्तलिखित प्रतिलेख के परिचय में कहते हैं,

The manuscript of this text is now very rare. I rely only one manuscript of this text when I made this transliteration.
This manuscript dated 1137 B.E. = 1775 A.D. consist of 12 palm-leafs and got from the ruin monastery called Gaing-Ok, Kyaung at pagan, before this old building was dismantle and now disappear (बोके 1981).

इस ग्रन्थ की पाण्डुलिपि अब बहुत दुर्लभ है। मैं इस ग्रन्थ की केवल एक पाण्डुलिपि पर आधारित होकर यह लिप्यन्तरण कर रहा हूँ।
यह 1137 बी.ई. = 1775 ई. का दिनाङ्कित पाण्डुलिपि है जिसमें 12 ताड़पत्र शामिल हैं और (मैं) पगान के क्यूंग (स्थान) के खंडहर होते गाईंग-ओक नामक विहार के नष्ट होने और गायब होने से पहले इसे प्राप्त किया था।

ग्रन्थकार एवं ग्रन्थकाल

चन्दसुरियगतिदीपनी की शुरुआत तीन बार बुद्ध वंदना (नमो तस्स ...) के बाद मङ्गलाचरण से होती है। मङ्गलाचरण में ग्रन्थ का नाम **चन्दसुरियगतिदीपनी** दिया गया है तथा लेखक ने बुद्ध के साथ-साथ अपने गुरु उदुम्बर महाथेर का भी अभिवादन किया है।[1] **उदुम्बर** नामक आचार्य का उल्लेख **गन्धवंस** (13, 27) में भी हुआ है। इनके बारे में बतलाया गया है कि मकुवनगर/पकुधनगर में **पेटकोपदेस** की टीका स्वाध्याय से लिखा था।[2] **चन्दसुरियगतिदीपनी** के रचनाकार का नाम पुष्पिका में उत्तमङ्ग मिलता है जो तम्मर या तम्बरा[3] नामक देश के निवासी, बर्मा में दो राजाओं के गुरु, तीनों वेदों के ज्ञाता एवं तिपिटक-महाथेर थे। उत्तम नामक

---

[1] नत्वा लोकविदुं बुद्धं, सद्धम्ममुत्तमं गणं।
उदुम्बरं महाथेरं, गुरुं मे अभिवन्दिय।।
पाळियट्ठकथादीसु, पोराणसत्थेसु सुन्दरं।
सारत्थमानिय चन्द-सुरियुगतिदीपनी।। (चन्दसुरियगतिदीपनी, इसी संस्करण से)

[2] पेटकोपदेसस्स टीका अत्तनो मतिया उदुम्बरनामाचरियेन मकुवनगरे कता (गन्धवंस 27)।

[3] ऐसा लगता है कि तम्मर का सम्बन्ध ताम्रलिप्त या ताम्रलिप्ति से होगा जो बंगाल की खाड़ी में स्थित एक प्राचीन नगर था। विद्वानों का मत है कि तामलुक ही प्राचीन ताम्रलिप्ति था। वर्तमान में तामलुक पश्चिम बंगाल के मिदनापुर जिले में रुपानारायन नदी एवं हुगली नदी के संगम से लगभग 19.3 किलोमीटर दूर स्थित है।

आचार्य का उल्लेख **गन्धवंस** (11, 18, 24) में है जो **बालावतार-टीका** एवं **लिङ्गत्थविवरण-टीका** इन दो ग्रन्थों के रचनाकार थे।[1] **गन्धवंस** में उत्तम आचार्य को अन्य बाईस आचार्यों के साथ जम्बूद्वीप वासी बतलाया गया है जिनका बर्मा में निवास स्थान अरिमद्द नगर था।[2] दुर्भाग्य से **गन्धवंस** में **चन्दसुरियगतिदीपनी** का नाम नहीं मिलता है। उत्तमङ्ग को उत्तममंगलाचरिय (देखें, च.दी. 6_{15}, $14_{12\text{-}18}$) के नाम से थाई देश निवासी सिरीमङ्गल विरचित **चक्कवालदीपनी** में सम्बोधित किया गया है एवं वहाँ पर **चन्दसुरियगतिदीपनी** से उद्धरण भी लिया गया है। **चक्कवालदीपनी** में उत्तममंगल के उल्लेख से **गन्धवंस** में उद्धरित उत्तम ही उत्तमङ्ग आचरिय थे इस तथ्य कि सम्भावना प्रबल हो जाती है। दूसरी तरफ तथ्यात्मक रूप से एक गलत सूचना मङ्:-क्री: महासिरिजेय-सू (Maṅ:-krī: Mahāsirijeya-sū) द्वारा 1888 में रचित बौद्ध कार्यों की बर्मी ग्रंथ सूची **पिटकत्-तो-स-मुइङ्:** (Piṭakat-tō-sa-muiṅ:) से मिलती है कि **चन्दसुरियगतिदीपनी** के लेखक श्रीलंका वासी असमघोस थे (देखें, न्युन्ट 2012: 75)।

चन्दसुरियगतिदीपनी की रचना कब की गयी थी यह स्पष्ट रूप से ज्ञात नहीं है। इतना निश्चित है कि इस ग्रन्थ की रचना 1520 ई. में थाई देश निवासी सिरीमङ्गल द्वारा रचित **चक्कवालदीपनी** से पहले जरूर हुई होगी। **चक्कवालदीपनी** में **चन्दसुरियगतिदीपनी** नाम तो नहीं मिलता लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि चन्दसुरियगतिदीपनीकार उत्तमङ्ग एक प्रतिष्ठित आचार्य रहे होंगे और उनके ग्रन्थ को तब-तक प्रसिद्धि मिल गयी होगी। बर्मा में रचित इस ग्रन्थ के महत्त्व का पता इससे भी चलता है कि थाई नरेश राम प्रथम ने 2345 बौद्ध-काल (= 1802 ई.) में इसका पालि से थाई में अनुवाद करवाया था।[3] मेरी जानकारी में इस ग्रन्थ का चार अलग-अलग थाई अनुवाद उपलब्ध है। पालि में ग्रह-नक्षत्र पर संक्षेप में प्रकाश

---

[1] उत्तमो नामाचरियो बालावतारटीकं लिङ्गत्थविवरणटीकं च दुविधं पकरणं इति अकासि (गन्धवंस 11)।

[2] सुभूतचन्दनाचरियो ... उत्तमाचरियो ... विमलबुद्धाचरियो ति इमे तेवीसति आचरिया जम्बूदीपका हेट्ठावुत्तप्पकारे गन्धे पुक्कामसंखाते अरिमद्दनानगरे अकंसु (गन्धवंस; देखें मिनैफ़ 1886: 67. कुमार 1992: 15 में उत्तमाचरियो नाम अनुपलब्ध है।)।

[3] Somdet Phrabuddhayodfahjulaloke Mahraj (King Ram I) assigned translation of Cantasuriyagati Tipani (थाई उच्चारण; पढ़े चन्दसुरियगतिदीपनी), and one of the scientific texts concerning the earth, written in Myanmar and was translated into Thai in B.E. 2345 (लौसुनथोर्न 2013: 20)।

डालने वाला यह एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। ग्रन्थ का एक वैकल्पिक शीर्षक **चन्दसुरियविनिच्छयपकरण** भी मिलता है।

विषय-वस्तु एवं स्रोत

चन्दसुरियगतिदीपनी रतनविनिच्छय, योजनविनिच्छय, पकिण्णक-विनिच्छय, गतिविनिच्छय, वीथिविनिच्छय, अयनविनिच्छय, आलोकविनिच्छय, उप्पत्तिविनिच्छय आदि आठ विनिच्छयों (= विश्लेषणात्मक चर्चा या व्याख्या) में विभाजित है। ग्रन्थ का सबसे बड़ा भाग **उप्पत्तिविनिच्छय** है जिसका विषय सूर्य और चन्द्रमा की विभिन्न राशियों में गतियों पर चर्चा करना है।[1]

ग्रन्थकार ने तिपिटक की अट्ठकथाओं एवं **सुत्तन्तटीका**, **संयुत्तटीका, अङ्गुत्तरटीका**, **विसुद्धिमग्गटीका**, **पाराजिककण्डटीका**, **सम्मोहविनोदनी, सारत्थदीपनी टीका** आदि का नाम लेकर स्रोत के रूप में प्रयोग किया है। इसके अतिरिक्त हम **अट्ठसालिनी** एवं पालि अट्ठकथाओं का भी उद्धरण ग्रन्थ में पाते हैं। किसी **छणुखाद/छणुक टीका** तथा **आयुब्बेद** का भी उल्लेख ग्रन्थकार ने किया है। इन ग्रन्थों के बारे में कुछ सूचना नहीं है।

सम्पादन सामग्री एवं सम्पादन पद्धति

प्रस्तुत देवनागरी संस्करण **चन्दसुरियगतिदीपनी** की एक पाण्डुलिपि; यू बोके (1981) द्वारा हस्तलिखित प्रतिलेख एवं नियद लौसुनथोर्न (2013) द्वारा प्रकाशित थाई संस्करण को सामने रखकर तैयार किया गया है। प्रयुक्त पाण्डुलिपि टोरंटो विश्वविद्यालय द्वारा होस्ट और रॉबर्ट्स लाइब्रेरी द्वारा समर्थित म्यांमार मैनुस्क्रिप्ट डिजिटल लाइब्रेरी के द्वारा उपलब्ध करवाया गया है। यह पाण्डुलिपि 23 पर्ण (folios) में है। इसके पहले पर्ण पर सिर्फ ग्रन्थ का नाम लिखा गया है। अंतिम पर्ण पर प्रतिलिपिकरण की तिथी भी दर्ज है जिसके अनुसार 1930 में इस पाण्डुलिपि को तैयार किया गया था। प्रस्तुत पाठ में पाण्डुलिपि की पर्ण संख्या

---

[1] फोन् हिनूबर (1996: 185) का यह कहना कि "The 5th and longest chapter, the Ayanavinicchaya, is a *jyotiṣa*-text perhaps based on some Skt. original", सही नहीं है। इस ग्रन्थ का सबसे बड़ा अध्याय उपत्तिविनिच्छय है जो पालि अट्ठकथा, टीका एवं किसी संस्कृत ज्योतिष स्रोत पर आधारित है।

म्यांमार मैनुस्क्रिप्ट डिजिटल लाइब्रेरी द्वारा दिये गये पर्ण संख्या के समान है। निश्चित रूप से बोके के पास उपलब्ध पाण्डुलिपि टोरंटो पाण्डुलिपि से भिन्न थी। यू बोके द्वारा प्रयुक्त पाण्डुलिपि 1137 बी.ई. = 1775 ई. का था तथा जिसमें 12 ताड़पत्र शामिल थे। लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि बोके ने पाण्डुलिपि को ज्यों का त्यों अपने हस्तलेख में प्रस्तुत नहीं किया। बहुत बार बोके ने पाठ को सही करने का प्रयास किया है। हालांकि विद्वानों को अब-तक सिर्फ यू बोके का ही हस्तलिखित प्रतिलेख प्राप्त था। नियद लौसुनथोर्न (2013) ने अपने थाई संस्करण के लिए यू बोके का प्रतिलेख का ही प्रयोग किया है। फोन् हिनूबर (1996: 185) भी केवल यू बोके के प्रतिलेख का ही उल्लेख प्रश्नवाचक चिह्न के साथ करते हैं। ऐसा लगता है कि फोन् हिनूबर को संदेह था कि च.सु.ग.दी. की कोई पाण्डुलिपि जरूर उपलब्ध होगी। इस बीच **चन्दसुरियगतिदीपनी** पर एक कार्य टोरंटो विश्वविद्यालय में झिनन जियांग (**Zhinan Jiang**) के द्वारा एम.ए. शोध निबंध के रूप में प्रस्तुत किया गया है। जियांग के कार्य को मैं देख नहीं सका हूँ। मैंने तरंगडाक (Email) के माध्यम से झिनन जियांग से सम्पर्क किया था और उनसे अपना कार्य शेयर करने का अनुरोध भी किया था। लेकिन अकादमिक बाध्यता के कारण जियांग ने मेरे अनुरोध को अस्वीकार कर दिया।

प्रस्तुत पाठ का निर्माण टोरन्टो पाण्डुलिपि (देखें, **टो.**) को मूल मानते हुए किया गया है। जहाँ भी पाण्डुलिपि के पाठ में त्रुटि परिलक्षित हुई है उसे बोके (देखें, बो.) के पाठ के आधार पर सही करने का प्रयास किया गया है अथवा फुट-नोट में सम्भावित पाठ दे दिया गया है। लौसुन्थोर्न (देखें, लौ.) के पाठ को सिर्फ उन स्थानों पर इंगित किया गया है जहाँ उनका पाठ बोके के पाठ से भिन्न है। यथासंभव **चन्दसुरियगतिदीपनी** के पाठ के मूल स्रोत को चिह्नित करने का प्रयास भी किया गया है। कही-कहीं मूल स्रोत के आधार पर भी पाठ को शुद्ध करने का प्रयास किया गया है।

आभार

सर्वप्रथम मैं प्रो. रमेश प्रसाद, विभागाध्यक्ष, पालि एवं थेरवाद विभाग एवं डीन

श्रमण-विद्या संकाय, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के प्रति अपना सादर आभार प्रकट करता हूँ। आपके उत्साहवर्धन एवं प्रोत्साहन के कारण यह कार्य पाठकों तक पहुँच रहा है। इस पाठ को तैयार करने में भिक्खु गनसन्त (बंग्लादेश) का विशेष सहयोग मिला है जिनके साथ सम्पूर्ण पाण्डुलिपि का परायण किया है। इस धम्म-पारायण के लिए मैं भिक्षु गनसन्त को साधुवाद देता हूँ। इस कार्य हेतु मेरे शोध छात्र, भिक्षु पञ्ञासामी (बर्मा) का भी सहयोग लिया हूँ। मैं आपको भी साधुवाद देता हूँ। **चन्दसुरियगतिदीपनी** का बोके द्वारा हस्तलिखित प्रतिलिपि उपलब्ध कराने के लिए भिक्षु थियाब मलाई (फ्रा देवराजचरिय), एसोसिएट प्रोफेसर एवं डीन, बौद्ध संकाय, महाचूललौङ्कार्ण विश्वविद्यालय, थाईलैंड के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। प्रो. नियद लौसुनथोर्न ने अपना थाई संस्करण मुझे उपलब्ध करवाया एवं इस विषय पर मेरे साथ लगातार चर्चा भी करती रही हैं। मैं आपके प्रति अपना अभार प्रकट करता हूँ। म्यांमार मैनुस्क्रिप्ट डिजिटल लाइब्रेरी के संचालकों को भी मैं अपना धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

सन्दर्भ सूची

कुमार, बिमलेन्द्र. Kumar, Bimalendra.

1992. *The Gandhavaṃsa: A History of Pali Literature.* Ed. Delhi: Eastern Book Linkers.

दुबे, प्रीति कुमारी. Dubey, Priti Kumari.

2001. *चक्कवालदीपनी.* सम्पादक. दिल्ली, वाराणसी: भारतीय विद्या प्रकाशन.

न्युन्ट, पीटर. Nyunt, P[eter].

2012. *Catalogue of the Piṭaka and Other Texts in Pāḷi, Pāḷi-Burmese, and Burmese (Piṭakat-tō-sa-muiṅ:) by Maṅ:-krī: Mahāsirijeya-sū.* Bristol: PTS.

लौसुनथोर्न, नियद. *เหล่าสุนทร, นิยะดา.* Lausunthorn, Niyada.

2556=2013. **จันทสุริยคติทีปนี**. *กรุงเทพฯ : กระทรวงการต่างประเทศ.* [*Candasuriya-gatidīpanī.* Bangkok: Ministry of Foreign Affairs].

फोन् हिनूबर, ओस्कर. von Hinüber, Oskar.

1996. *A Handbook of Pāli Literature*. Berlin, New York: Walter de Gruyter.

पाण्डुलिपि

टो. UPT538.3_Candasūriyagatidīpanī Manuscript. टोरंटो विश्वविद्यालय द्वारा होस्ट और रॉबर्ट्स लाइब्रेरी द्वारा समर्थित म्यांमार मैनुस्क्रिप्ट डिजिटल लाइब्रेरी.

बो. बोके, यू. Bokay, U, 1981. *Candā Suriya Gati Dipanī.* हस्तलिखित प्रतिलेख.

संक्षेप : (पालि पाठ छट्ठ सङ्गायन, इगतपुरी से उद्धरित)

अ.स.	अट्ठसालिनी.
अभि.प.	अभिधानप्पदीपिका.
क.वि.टी.	कङ्खावितरणी-टीका/कङ्खावितरणीपुराणटीका.
गंधवसं	देखें, कुमार 1992.
छ.सङ्गा.	Chaṭṭha Saṅgāyana Tipitaka Version 4.0 (CST4) [Computer software]. Retrieved from http://www.tipitaka.org/cst4).
दी.नि.	दीघनिकाय.
दी.नि.टी.	लीनत्थप्पकासनी.
पिटकत्-तो-स-मुइङ्	देखें, न्युन्ट 2012.
वजिर.टी.	वजिरबुद्धि-टीका.
विसुद्धि.टी.	विसुद्धमग्ग-महाटीका.
सारत्थ.टी.	विनयपिटके सारत्थदीपनी-टीका.
सु.नि.अट्ठ.	सुत्तनिपात अट्ठकथा.
बो.	देखे, बोके 1981.
लौ.	देखें, लौसुनथोर्न 2556=2013.
[ ]	संपादक द्वारा जोड़ा हुआ.

[टो[203b], बो[1]] **चन्दसुरियगतिदीपनी**[1]

। नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स। ति[2]।

नत्वा लोकविदुं बुद्धं, सद्धम्ममुत्तमं गणं।
उदुम्बरं महाथेरं, गुरुं मे अभिवन्दिय।। 1।।
पाळियट्ठकथादीसु, पोराणसत्थेसु[3] सुन्दरं।
सारत्थमानिय चन्द-सुरियगतिदीपनी।। 2।।
अगाधं[4] मन्दबुद्धीहिति[5], नभे चक्कपरिब्भमं।
अदिट्ठेहि गणकेहि[6], दुब्बोधमतिवड्ढनं[7]।। 3।।
लोकुप्पत्यादिकारेहि, मिच्छाञाणेन दुक्कटं।
लोकविदूपदस्सेव, टीका संवण्णियाम्यहं।। 4।। [बो[2]]
केचीपि नयटीकाय[8], अधिप्पायमजानतो[9]।
यं दोसं अभिरोपन्ति[1], तं ममेतं विनासये।। 5।।

---

[1] पालि में सुरिय और सूरिय दोनों पाठ मिलता है। सुरिय पाठ का प्रयोग PTS (दी.नि. I.10) एवं नालन्दा संस्करण (दी.नि. I.11) संस्करण में किया गया है। बर्मी एवं छट्ठसङ्गायन संस्करण में सूरिय पाठ को रखा गया है (देखें वि.वि.वि. दी.नि. I.9)। प्रस्तुत संस्करण में बोके के अनुसार सुरिय पाठ रखा गया है। लौसुनथोर्न (2013) ने भी सुरिय पाठ रखा है। च.सु.ग.दी. बर्मी परम्परा से प्राप्त होने वाला ग्रन्थ है; अतः यहां सूरिय पाठ अपेक्षित था।

[2] बो. एवं लौ. में अनुपलब्ध। पाण्डुलिपि टो में ‘सम्मासम्बुद्धस्सति’ पाठ मिलता है। यहाँ ‘ति’ का तात्पर्य तीन बार है। अर्थात् नमो तस्स… नमो तस्स… नमो तस्स…।

[3] लौ. *โหราสตฺเถสุ* = होरासत्थेसु

[4] टो. अगाथं

[5] बो. मन्दबुद्धेहि.

[6] बो. गनकेहि

[7] बो. दुब्बोधं मतिवड्ढनं

[8] बो. केचि विनयटीकाय

[9] टो. अधिब्बायमजानतो

रतननानं योजनानञ्च, पकिण्णगतिविधिनं[2]।
अयनालोकुप्पत्तिनं, अट्ठञ्ञेय्या विनिच्छयाति।। 6।।

[1. रतनविनिच्छयो]

तत्थ रतनविनिच्छयो पुरिसवसेन दट्ठब्बो। असङ्ख्येय्यवस्सायुगतो पट्ठाय हि याव दसवस्सायुकमनुस्सा होन्ति। तावेको अन्तरकप्पो। सो च महाथाममज्झिमथामहिनथामपुरिसानं[3] वसेन तिविधो होति।

[टो[204a]] एवं भूतो मज्झिमथामपुरिसो मज्झिमपुरिसोति **आयुब्बेदे**[4] व[5] वुत्तो। न पन मज्झिमदेसे अज्ज पुरिसो। अज्ज पगति पुरिसो[6] पन हिनथामपुरिसो व। अज्ज पि हि मज्झिमदेसो मगधेसु थाममज्झिमपुरिसस्स[7] **[बो[3]]** एकरतनपरिमाणतो अयो दण्डो ठपितो तं किञ्चिक[8] नामं कत्वा वळञ्जन्ति[9]। तत्थ हि मज्झिमथामपुरिसस्स एकरतनं। अज्ज पकतिपुरिसस्स दियड्ढरतनं होतीति दट्ठब्बं।

[रतनविनिच्छयो निट्ठितो।]

---

1 बो. भिरोपन्ति
2 टो. पकिण्णगधिविधिनं; बो. पकिण्णगतिविधिनं. 'पकिण्णगतिवीथिनं' पाठ अपेक्षित था।
3 टो. महाधाममज्झिमधामहिनधामपुरिसानं. टो. में सर्वत्र थाम के बदले धाम पाठ.
4 टो. आयुबेदे
5 बो. में अनुपलब्ध
6 पढ़े, अज्ज पकति पुरिसो] पालि पाठ टो. के अनुसार. बो. एवं लौ. में अनुपलब्ध.
7 लौ. *मज्झिमथामपुरिसस्स* = मज्झिमथामपुरिसस्स
8 बो. कच्चन्ति
9 बो. वळञ्जन्ति

[2. योजनविनिच्छयो]

योजनं[1] विनिच्छयो पन रथयुग-पमानतो[2] पट्ठाय याव एकवीसति रतन-पमाणयट्ठिया[3] गत[4]-योजनानिति दट्ठब्बो।

दसहत्थट्ठानानं[5] उसभं अट्ठवीसति हत्थट्ठानं उसभं नामाति **सुत्तन्तटीकाय**ं वुत्तत्ता[6]। विदत्थि पमाणादिकापि पोक्खरणीयट्ठि आदयो। तेसु तेसु ठानेसु तासं तासं[7] नामेहि वोहरितब्बा।

तासु पन एकवीसति[8] रतनपमाणो दण्डो चक्कवाळयट्ठि नाम। सा च तासं सद्दं सुत्वा सद्दन्तरं अड्ढगावुता [**टो**[204b]] गावुत्त इच्चादिनाम[9] **समयसुत्तन्तट्ठकथाय**ं[10] आगता।[11] **[बो**[4]**]** ताय हि तत्थेव हिमवन्ते तेसट्ठिया नगरसहस्सेसु, नवनवुतिया दोणमुखसहस्सेसु, रतनपट्टनेसु चतूसु दीपेसु द्विपरित्तदीपसहस्सेसु च चक्कवाळेसु च योजनपरिमाणं कतं होति।[12]

तञ्च "कोसमत्तठानं सद्दन्तरन्ति" **महासमयसुत्तन्तटीका**यं वुत्तं।[13] "सद्दन्तरे थाममज्झिमस्स पुरिसस्स सद्दसवनठानेसु[14] यो गावुतस्स[1] चतुत्थो भागो सो कोसोति

---

[1] बो. योजन
[2] बो. रथयुग पमान योजनो
[3] बो. एकवीसति रतन पमन यट्ठिया
[4] बो. कत
[5] बो. दस्हत्थठानं
[6] बो. वुत्तत्था
[7] बो. तेसं तेसं
[8] टो. एकवीस
[9] टो. इच्छादि
[10] बो. महासमयसुत्तन्तट्ठकथायं
[11] देखें, स.नि.अट्ठ. 1.67
[12] देखें, स.नि.अट्ठ. 1.67
[13] दी.नि.टी. II.216.
[14] टो. सद्दवसनट्ठानेसु; बो. सद्दसवनथानेसु

वुच्चति। द्विसहस्सदण्डपमाणठानं" दण्डोति **अङ्गुत्तरटीका**यं वुत्तं।[2] तिसहस्सधनुपमाणं दियड्ढकोसन्ति **विसुद्धिमग्ग-टीका**यञ्च वुत्तं।[3] "आचरियधनु नाम[4] पकतिया हत्थेन नवविदत्थिपमाणं। जियाय पन आरोपिताय चतुहत्थपमाणन्ति" **पाराजिककण्डटीका**यं वुत्तं।[5] विदत्थि अधिकं दसरतनपमाणो दण्डो सिनेरुयट्ठि नामाति **सम्मोहविनोदनियं**[6] आगतो।[7] थाममज्झिमपुरिसस्स हि सत्तरतनानि पकतिपुरिसस्स विदत्थि अधिकानि दसरतनानि होन्ति।[8]

[बो5] ताय पन तत्थेव सिनेरु योजनकतं हिमवन्तपब्बतादीसु च पाटलि-सिम्बलि[9]-जम्बुतिआदीसु चेव समुद्द-सत्त-महादहादिसु[10] च छद्दन्तदहे निग्रोधादीसु च योजनं वेदितब्बं। छळङ्गुलाधिकपञ्चरतनपमाणदण्डो अयनयट्ठि[11] नाम। सा च

---

[1] टो. गावुत्तत्तस्स

[2] 'सद्दन्तेरेति थाममज्झिमस्स पुरिसस्स सद्दसवनट्ठाने। गावुतस्स चतुत्थो भागो कोसोतिपि वुच्चति द्विसहस्सदण्डप्पमाणट्ठानं।' अ.नि.टी. II.109.

[3] उत्तरेन वा दक्खिणेन वाति वुत्तं गमनागमने सूरियाभिमुखभावनिवारणत्थन्ति। सहस्सधनुप्पमाणं दियड्ढकोसं। विसुद्धि.टी. I.139.

[4] बो. नम्

[5] क.वि.टी. 314.

[6] टो. ससमोहविनोदनयं

[7] देखें, तत्थ तथारूपो भिक्खु अणुमत्तानि वज्जानि वज्जतो भयतो पस्सति नाम। तं दस्सेतुं अयं नयो कथितो – परमाणु नाम, अणु नाम, तज्जारी नाम, रथरेणु नाम, लिक्खा नाम, ऊका नाम, धञ्ञमासो नाम, अङ्गुलं नाम, विदत्थि नाम, रतनं नाम, यट्ठि नाम, उसभं नाम, गावुतं नाम, योजनं नाम। तत्थ 'परमाणु' नाम आकासकोट्ठासिको मंसचक्खुस्स आपाथं नागच्छति, दिब्बचक्खुस्सेव आगच्छति। ... सत्तधञ्ञमासप्पमाणं एकं अङ्गुलं। तेनङ्गुलेन द्वादसङ्गुलानि विदत्थि। द्वे विदत्थियो रतनं। सत्त रतनानि यट्ठि। ताय यट्ठिया वीसति यट्ठियो उसभं। असीति उसभानि गावुतं। चत्तारि गावुतानि योजनं। तेन योजनेन अट्ठसट्ठियोजनसतसहस्सुब्बेधो सिनेरुपब्बतराजा। विभ.अट्ठ 325.

[8] तुलना करें; सब्बो हि पुरिसो अत्तनो अत्तनो विदत्थिया सत्तविदत्थिको होति, सुगतस्स च एकाविदत्थि मज्झिमस्स पुरिसस्स तिस्सो विदत्थियो होन्ति, तस्मा कण्डुपटिच्छादि पकतिपुरिसस्स पमाणं आपज्जति तिरियं, दीघसो पन दिगुणं आपज्जतीति। वजिर.टी. 309.

[9] टो. सिप्पलि

[10] बो. सम्सत्तमहादहादीसु

[11] टो. आनायट्ठि

धनुपञ्चसतिकन्ति आदीसु आगता अधिकानि पन कत्थचि अब्बोहारिकानि। चक्कवाळयट्ठि[1] सिनेरुयट्ठि अयनयट्ठिहि कतानि तीणि योजनानि इधापि आगतानि।

[योजनविनिच्छयो निट्ठितो।]

[3. पकिण्णकविनिच्छयो]

पकिण्णकविनिच्छये[2] पन :

"चतुरासीति सहस्सा, अज्झोगाळ्हो महण्णवे।
अच्चुग्गतो[3] तावदेव, सिनेरु पब्बतुत्तमो"ति।। 7।।[4]

इदं हेट्ठा पथवीतो याव उपरि सिनेरुयट्ठिया कत योजनेन अट्ठसट्ठि सहस्साधिक योजनसतसहस्सुब्बेधो सिनेरु[5] पब्बतराजाति वुत्तं होति। चक्कवाळ-यट्ठिया कत योजनं[6] पन हेट्ठा पथवीतो याव उपरि चतुरासीति योजनसहस्सुब्बेधो **[बो[6]]** होति।

तेनाह, "सिनेरु भिक्खवे पब्बतराजा चतुरासीति योजनसहस्सानि आयामेन[7] चतुरासीति योजनसहस्सानि वित्थारेना"ति।[8] चक्कवाळयोजनं[9] हेट्ठाधिप्पेतं।

---

[1] बो. चक्कवाळ
[2] टो. पकिण्णविनिच्छये
[3] टो. अज्जुग्गतो
[4] बो. का पाठ गद्य रूप में है। स्रोत अ.स., रूपकण्ड, 333. चक्कवाळदीपनी (2010: 6_{8-9}) दुतिय कण्ड, पब्बत-निद्देस में उद्धरित।
[5] "हेट्ठा पथवीतो... सिनेरु" च.दी. (2010: 6_{17-18}) में उत्तममंगलत्थेर के नाम से उद्धरित।
[6] बो. योजनेन
[7] बो. अयं न
[8] स्रोत, अ.नि. सत्तसूरियसुत्त 7.66
[9] बो. चक्कवाळ योजन]

पाचीनपस्सं रजतं, दक्खिणं इन्दनी-[टो205a]-लकं[1]।
पच्छिमपस्सं फलिकं, उत्तरं कनकमयन्ति।। 8।।[2]

सिनेरुस्स युगन्धरपब्बतस्स उपरिभागेन[3] पाचीनदिसादीहि निक्खन्तर-जतादिरस्मियो समुद्दपिट्ठेन[4] गन्त्वा चक्कवाळपब्बतं आहच्च[5] तिट्ठन्ति। तासं पन रस्मिनमन्तरेसु चत्तारो महासमुद्दा होन्ति। ननु च सिनेरुस्स चेव सिनेरुमत्थके वेजयन्ता[6] पसादादि रतनानञ्च[7] ओभासेहि निक्खन्त रजतादि रस्मियो समुद्दपिट्ठेन गन्त्वा चक्कवाळपब्बतं आहच्च तिट्ठन्ति[8]। इमस्मिं चक्कवाळे सब्बदा आलोको व भवेय्य। न पन अन्धकारोति। सच्चं धम्मताय यथा हि धम्मता [यथा हि धम्मताय][9] खज्जोतमत्तस्स[10] ओभासेन आलोको पञ्ञायति। न पन महन्तानं रजतसुवण्णानं एवं चन्दिमसुरियदेवपुत्तानंपि[11] पुब्बोपचित[12]-पुञ्ञत्ता **[बो7]** अभिपत्तिअत्ता[13] च तादिसो आलोको[14] होति। न पन सक्कादिनं तादिसानं[15] नाभिपत्तिअत्ताति।

---

1 टो. इन्दनिलकं

2 बो. का पाठ गद्य रूप में है। तुलना, सिनेरुपब्बतुत्तमोति पब्बतेसु उत्तमो, पब्बतोयेव वा उत्तमो पब्बतुत्तमो, सिनेरुसङ्खातो पब्बतुत्तमो सिनेरुपब्बतुत्तमो, सिनेरुपब्बतराजाति वुत्तं होति। तस्स च पाचीनपस्सं रजतमयं, तस्मा तस्स पभाय अज्झोत्थरन्तिया पाचीनदिसाय समुद्दोदकं खीरं विय पञ्ञायति। दक्खिणपस्सं पन इन्दनीलमणिमयं, तस्मा दक्खिणदिसाय समुद्दोदकं येभुय्येन नीलवण्णं हुत्वा पञ्ञायति, तथा आकासं। पच्छिमपस्सं फलिकमयं। उत्तरपस्सं सुवण्णमयं। वि.पि. सारत्थ.टी.

3 टो. उपरिभावेन

4 टो. समुद्धपिट्ठेन

5 बो. आहिच्च

6 बो. वेजयन्त

7 बो. रतनञ्च

8 बो. में अनुपलब्ध 'निक्खन्त रजतादि रस्मियो समुद्दपिट्ठेन गन्त्वा चक्कवाळपब्बतं आहच्च तिट्ठन्ति।'

9 बो. अनुलपलब्ध

10 बो. एवं टो. में पाठ स्पष्ट नहीं है. लौ. *ธมฺมทฺขชฺโชตมตฺตสฺส* = धम्मद्खज्जोतमत्तस्स

11 टो. 0द्वेवापुत्तानंपि

12 टो. पुप्पोपचित

13 टो. अभिपत्तिअथा. लौ. *ปุพฺโพ-ปจิตปุญฺญตฺอภิปตฺติอตฺตา* = पुब्बो-पचितपुञ्ञत्अभिपत्तिअत्ता

14 टो. आलो

15 बो. तादिसो नं. लौ. *ตาทิสานํ* = तादिसानं

ततो उपड्ढुपड्ढेनाति इदं युगन्धरपब्बतो बाहिरपथवीतो याव उपरि सिनेरुयोजनेन चतुरासीति सहस्सुब्बेधो होति। अन्तो पनस्स[1] उदके चतुरासीति सहस्सानि उपरि द्वाचत्तालीससहस्सानि चाति परिपिण्डितानि[2] छब्बीसतिसहस्साधिकानि सतसहस्सयोजनानि होन्तीति दट्ठब्बं। इमिना नयेन सेसेसुपि अन्तोबाहिरेसु उपड्ढुपड्ढपमाणता वेदितब्बा।

महासमुद्दो, भिक्खवे, अनुपुब्बपोणाति[3] आदिकं पि महासमुद्दं[4] पथविया अनुपुब्बनिन्नादिकं सन्धाय वुत्तं। न पन उदकस्स निन्नादिकं यदिकं[5] हि उदकस्सानुपुब्बनिन्नादिका अधिप्पेता।

तदा चतुरासीति सहस्सानि अज्झोगाळ्हो महण्णवेति द्वेचत्तालीससहस्सानि महासमुद्दे अज्झोगाळ्हो। तत्थकमेव उपरि उग्गतो युगन्धरपब्बतोति आदीनि न वत्तब्बानि सियुं।

[बो[8]] सिनेरुयुगन्धरादीनं अन्तरे सीदसमुद्देसु वातो न[6] वायति। ततो येव उदकं अनाविलं अतिपसन्नं सुखुमं होति। तस्मा मोरपत्तमत्तम्पि[7] सीदतेवाति।[8] तं हि **सळायतनसञ्ञुत्तटीका**यं वुत्तं। तत्थ किर वातो न वायतीति। सिनेरुयुगन्धरादीनं अन्तरे समुद्दो[9] गम्भीरतो च विसालतो च चतुरासीति सहस्सयोजनो होति।[10]

---

1 बो. पन

2 अपेक्षित पाठ परिमण्डितानि

3 बो. अनुपुब्बपोणोति

4 बो. महासमुद्द

5 बो. यदि

6 टो. न ण

7 बो. मोरहत्थमत्तम्पि

8 तुलना, सिनेरुयुगन्धरादीनं अन्तरे सीदन्तरसमुद्दा नाम होन्ति। तत्थ किर उदकं सुखुमं मोरपत्तमत्तम्पि पक्खित्तं पतिट्ठातुं न सक्कोति सीदतेव, तस्मा ते सीदसमुद्दा नाम वुच्चन्ति (सारत्थ.टी. I.222)।

9 बो. समुद्दे

10 तुलना, सिनेरुयुगन्धरादीनं समुद्दतो उपरिअधोभागानं वसेन उब्बेधो वुत्तो, आयामवित्थारेहिपि सिनेरु चतुरासीतियोजनसहस्सपरिमाणोव। यथाह ''सिनेरु, भिक्खवे, पब्बतराजा चतुरासीति योजनसहस्सानि आयामेन, चतुरासीति योजनसहस्सानि वित्थारेना''ति (अ॰ नि॰ 7.66)।

युगन्धरइ-[**टो**^{205b}]-सिन्धरानं अन्तरे च[1] समुद्दोपि गम्भीरतो[2] विसालतो च द्वाचत्तालीससहस्सा योजनो[3] होति। इमिना नयेन गम्भीरविसालता सेसेसु दट्ठब्बा।

तेनाह 'सिनेरुआदीनं अच्चुग्गमनस्समपरिमाणाति[4] वदन्ती'ति।[5] अच्चुग्गमनसमपरिमाणता[6] ति[7] उदकस्स उपरिग्गतसमानपरिमानता[8]। तं तं परिक्खिपित्वाति[9] एतेन **सत्त पब्बता**[10] सिनेरुआदयो यथाक्कमं पाकारो विय समन्ततो परिक्खिपित्वा।

"सुदस्सनो करविको, इसिन्धरो युगन्धरो।
नेमिन्धरो विनतको, अस्सकण्णो गिरी ब्रहाति"।। 9।।[11]

---

[1] बो. अनुपलब्ध
[2] बो. गम्भिरतो च
[3] बो. द्वाचत्तालीस सहस्स योजनो
[4] टो. अज्जुग्गमनस्समपरिमाणाति. बो. अच्चुग्गमनं समपरिमाणानि
[5] स्रोत सारत्थदीपनी-टीका 1.223
[6] टो. अज्जुग्गमनस्समपरिमाणता
[7] बो. हि
[8] बो. उपरिउग्गतसमानपरिमाणता
[9] टो. परिक्खिपित्वा पाति
[10] देखें जा.अट्ठ. VI.150, तत्थ सुदस्सनोति अयं, महाराज, एतेसं सब्बबाहिरो सुदस्सनो पब्बतो नाम, तदनन्तरे करवीको नाम, सो सुदस्सनतो उच्चतरो। उभिन्नम्पि पन तेसं अन्तरे एकोपि सीदन्तरमहासमुद्दो। करवीकस्स अनन्तरे ईसधरो नाम, सो करवीकतो उच्चतरो। तेसम्पि अन्तरे एको सीदन्तरमहासमुद्दो। ईसधरस्स अनन्तरे युगन्धरो नाम, सो ईसधरतो उच्चतरो। तेसम्पि अन्तरे एको सीदन्तरमहासमुद्दो। युगन्धरस्स अनन्तरे नेमिन्धरो नाम, सो युगन्धरतो उच्चतरो। तेसम्पि अन्तरे एको सीदन्तरमहासमुद्दो। नेमिन्धरस्स अनन्तरे विनतको नाम, सो नेमिन्धरतो उच्चतरो। तेसम्पि अन्तरे एको सीदन्तरमहासमुद्दो। विनतकस्स अनन्तरे अस्सकण्णो नाम, सो विनतकतो उच्चतरो। तेसम्पि अन्तरे एको सीदन्तरमहासमुद्दो। अनुपुब्बसमुग्गताति एते सीदन्तरमहासमुद्दे सत्त पब्बता अनुपटिपाटिया समुग्गता सोपानसदिसा हुत्वा ठिता।
[11] स्रोत जातक II.143; सु.नि.अट्ठ. II.149; सारत्थ.टी. I.223;अ.स. रूपकण्ड. 333.
युगन्धरो ईसधरो, करवीको सुदस्सनो।
नेमिन्धरो विनतको, अस्सकण्णो गिरि ब्रहा॥
च.दी. (2010:10$_{13-14}$) में भी उद्धरित।

एतस्स मातलिदेवपुत्तस्स वचनं नाम। परिवत्तनं न होति देवता हि मूलभासासु अतिपसुता भवन्तीति। मातलि-**[बो१]**-सारथी पन तावतिंसाभिमुखं रथं पाचन्तो[1] सुदस्सननेमिन्धरानमन्तरा[2] मत्थकं पापुणि। सो च बोधिसत्तेन पुट्ठो पुरतो अभिमुखे ठिते चत्तारो पब्बते सुदस्सनो ...पे[3]... युगन्धरोति आचिक्खित्वा पच्छतो अतिक्कन्ते तयो पब्बते नेमिन्धरो ...पे[4]... ब्रहाति[5] पुन आचिक्खति[6]। तस्मा नेव पाळिया दोसो अत्थि। अट्ठकथाय दोसोति दट्ठब्बं।[7]

हिमवा पब्बतो पञ्च योजनसतानि उच्चोति एत्थ सिनेरुयोजनं दट्ठब्बं[8]। योजन[9]-सहस्सानि तीणि आयाम वित्थारतोति एत्थ पन चक्कवाळयोजनं दट्ठब्बं।[10] अनोतत्तादीसु[11] सत्तसु महासरेसु[12] च पब्बतकूटादीसु[13] रुक्खवनादीसु च सिनेरुयोजनं।

दक्खिणेन वाति दक्खिणायनन्तेन वा। उत्तरेन वाति उत्तरायनन्तेन वा। इदं पन सुरियं उदयकाले अत्थङ्गमनकाले च पब्बतन्तरे नातिमुखभावतो[14] वुत्तं। न पन तस्स उत्तरतो गमनतो उजुं गच्छन्ता न रोहन्तीति, इदं पि

---

1 बो. पाचेन्तो.

2 टो. सुदस्सननेमिनदराणनमन्दरा

3 पढ़े, करविको, इसिन्धरो।

4 पढ़े, विनतको, अस्सकण्णो।

5 टो. ब्रह्माति

6 टो. आचिक्खि

7 "एतस्स मातलिदेवपुत्तस्स वचनं.... दोसोति दट्ठब्बं।" पुरा परिच्छेद च.दी. (2001: 14) में उत्तममंगलाचरियेन के नाम से उद्धरित है।

8 बो. एवं लौ. में अनुपलब्ध.

9 बो. एवं लौ. में अनुपलब्ध.

10 योजनानं सतानुच्चो, हिमवा पञ्च पब्बतोति हिमवा पब्बतो पञ्च योजनसतानि उच्चो, उब्बेधोति अत्थो। ...। योजनानं सहस्सानि, तीणि आयतवित्थतोति योजनानं तीणि सहस्सानि आयामतो च वित्थारतो चाति अत्थो, आयामतो च वित्थारतो च तीणि योजनसहस्सानीति वुत्तं होति। सारत्थ.टी. I.224.

11 टो. अनोत्यादीसु

12 टो. महाचरेसु

13 टो. पब्बतकुटादीसु

14 बो. पब्बतन्तरे नाभिमुखाभावतो.

पब्बतन्तराभिमुखाभावतो वुत्तं। न मच्छकच्छपानीति[1] इदं तेसु येव तित्थेसु पुञ्ञवन्तानं **[बो[10]]** आनुभावधम्मताहि[2] अनगमनतो[3] वुत्तं। देवलोकेसु[4] मच्छकच्छपानं[5] अत्थिताय ते तत्थ नत्थीति न वत्तब्बं। गङ्गादीसु चेव छद्दन्तदहवनेसु च सिनेरुयोजनं तासु भूमिसु[6] यावता जम्बुसाखा छादेत्वा ठिताति **मज्झिमपण्णासटीका**यं वुत्तं। तासुति[7] निमित्तत्थे चेतं सत्तमीवचनं यथा। [**टो**[206a]]

पासाणसक्खरा चेव, कथला कण्डकखाणुका।
सब्बे मग्गं विवज्जन्ति, गच्छन्ते लोकनायकेति।। 10।।[8]

'ताहि साखादीहि' हेतूहीति अत्थो। जम्बूपत्तसाखाहि वस्सोदकं हिमबिन्दु[9] हेट्ठा पतित्वा सन्दमानवसेन[10] नदीयो[11] पभवन्तीति[12] अत्थो। तेन वुत्तं

---

1 टो. मच्छगच्छपानिति
2 टो. आनुभावधम्माताहि
3 बो. अनुपगमनतो
4 बो. ०हि
5 टो. मच्छगच्छपानं
6 टो. भूम्मिसु
7 बो. तासु
8 ''पासाणा सक्खरा चेव, कथला खाणुकण्टका।
सब्बे मग्गा विवज्जन्ति, गच्छन्ते लोकनायके॥ स्रोत, म.नि.अट्ठ. 3.17, सं.नि.अट्ठ. 3.89, सारत्थदीपनी.टीका 3.282. बो. एवं लौ. का पाठ गद्य रूप में है।
9 बो. हिमबिन्धु
10 टो. सन्तमानवसेन
11 नदियो पाठ होना चाहिए था। नदीयो प्रयोग महावंस में है।
12 बो. भवन्तीति

संयुत्तटीकायं[1] महाजम्बूसाखाय[2] हेट्ठा पवत्तनदीयन्ति[3]।[4] चन्दिमसुरियेसु चेव तेसं अन्तरे च चक्कवाळयोजनं। उपड्ढपग्गतोति[5] रासीमण्डलस्स उपड्ढतो।

[पकिण्णकविनिच्छयो निट्ठितो।]

[4. गतिविनिच्छयो]

[बो[11]**]** गतिविनिच्छये कदाचि दक्खिणतोति इदं मनुस्सानं पाकटभावेन वुत्तं। दक्खिणायनतोति अत्थो। उत्तरतोति उत्तरायनतो। **'चन्दस्स उभोसु पस्सेसु ...पे... गच्छन्ती'ति**[6] एत्थ नक्खत्तानि सुरियस्स उभतो[7] पस्सेसु गच्छन्ति। यदि चन्दस्स उभोसु पस्सेसु ते गच्छेय्युं तदा सुरियो नक्खत्तानि पटिच्छादेयाति[8]।

[9]**'चन्दो धेनु विय ...पे... उपसङ्कमती'ति**[10] नक्खत्तानि येव दिवसे दिवसे सतसहस्सानि चन्दमण्डलं[11] ओहाय गच्छन्ति। तस्मा चन्दो तानि उपसङ्कमन्तो विय

---

1 बो. संयुत्तटीकाय

2 बो. महाजम्बुसाखाय

3 बो. पवत्ते नदी गङ्गायन्ति

4 देखें सं.नि.टीका I.145, महाजम्बुसाखाय पवत्तनदियन्ति महाजम्बुसाखाय हेट्ठा सञ्जातनदियं।

5 पढ़े, बो. उपड्ढमग्गतोति

6 तथा हेस एकस्मिं मासे कदाचि दक्खिणतो, कदाचि उत्तरतो दिस्सति, चन्दस्स उभोसु पस्सेसु नक्खत्ततारका गच्छन्ति, चन्दो धेनु विय वच्छं तं तं नक्खत्तं उपसङ्कमति, नक्खत्तानि पन अत्तनो गमनट्ठानं न विजहन्ति, अत्तनो वीथियाव गच्छन्ति। सूरियस्स पन उजुकं गमनं सीघं, तिरियं गमनं दन्धं। तिरियं गमनं नाम दक्खिणदिसतो उत्तरदिसाय, उत्तरदिसतो दक्खिणदिसाय गमनं, तं दन्धं छहि छहि मासेहि इज्झनतो। सारत्थदीपनी टी. 1.229.

7 बो. उभोसु

8 टो. यदि चन्दस्स उभतो पस्सेसु गच्छन्ति। यदि चण्डस्स उभसो पस्सेसु ते गच्छेय्युं। तदा सूरियो नक्खत्तानि पटिच्छादेय्याति।

9 सिर्फ बो. धेनु वच्छं उपसङ्कमति विय

10 दी.नि.अट्ठ.

11 टो. चण्डमण्डलं

होति। नक्खत्तानि पन चक्केन पटिबद्धत्ता[1] अत्तनो गमनठानं न विजहन्ति। तथाहि अस्सवणी, भरणी, कत्तिकाय, एकपादं मिस्सरासिम्हि[2] सदा तिट्ठन्ति। कत्तिकाय तिपादं[3] रोहणी मिग्गसीर[4] द्विपादं[5]। प्रिस्सरासीम्हि[6] सदा तिट्ठन्ति। एवं सेसेसु रासीसु सेसानि नक्खत्तानि सदा तिट्ठन्ति। चन्दं पन रासियो दियड्ढदिवसे अतिक्कमन्ति। दन्धंति सणिकं। **[बो[12]]** दक्खिणदिसतोति दक्खिणायनस्स अन्ततो एव[7] उत्तरायन[8] दिसायाति[9] उत्तरायनस्स [10]अन्ततो। दक्खिणदिसायाति दक्खिणायनस्स च गमनं। तथा[11] हि कक्कट-सीह-कञ्ञ[12]-तुल-विच्छिक-धनु-रासियो दक्खिणायनं नाम।[13] मकार[14]-कुम्भ-मीन-मेस्स[15]-पस्सु[16]-मेथुन-रासियो उत्तरायनं नाम।[17] सुरियो हि[18] दक्खिणायनसङ्खाते छमासे अन्तोवीथियन्ततो[19] बहि निक्खमित्वा[20] चक्कं अधो ओरुह्य[21] गच्छति। उत्तरायनसङ्खाते छमासे

---

1 टो. पटिबन्धत्था
2 लौ. *เมสราสิมฺหิ* = मेसरासिम्हि
3 बो. तिपदं
4 बो. मिगसीर, लौ. *มิคสิร* = मिगसिर
5 बो. द्विपदं, लौ. *ทฺวิปาทํ* = द्विपादं
6 बो. प्रिस्सरासीम्हि , लौ. *ปสฺสุราสิมฺหิ* = पस्सुरासिम्हि
7 बो. एवं
8 बो. उत्तराय
9 टो. दीसायाति
10 बो. उत्तरदिसतोति उत्तरायनस्स
11 बो. तत्था
12 बो. कञ्ञा
13 तुलना, आसाळ्हसङ्कन्तिमारब्भ पुस्सं याव दक्खिणा गति दक्खिणायनं। अभि.प.टी. 65.
14 पढ़े, लौ. मकर
15 बो. मिस्स
16 पढ़े, लौ. पुस्स
17 तुलना, पुस्ससङ्कन्तिमारब्भ आसाळ्हं याव आदिच्चस्स उत्तरा गति उत्तरायनं। अभि.प.टी. 65,
18 बो. ति
19 टो. अन्तोवीधियन्ततो
20 टो. नक्खमित्वा
21 टो. ओयूय्ह

बाहिरवीधियन्ततो[1] अन्तो पवेसित्वा[2] चक्कमुद्धमारुह्य गच्छति। तेनाह, 'छहि मासेहि इज्झनतोति'[3]।

[गतिविनिच्छयो निट्ठितो।]

[5. वीथिविनिच्छयो]

[**टो**[206b], **बो**[13]] वीथिविनिच्छये[4] पन एवं भूतेसु द्वीसु अयनेसु **अजवीथि** हेट्ठा होति। ततो उपरि **नागवीथि**[5]। ततो उद्धं **गोवीथि** होति। तथा हि दक्खिणायने ताव। कक्कटसीहसङ्खातो[6] आसव्हो च सावणो[7] चाति द्वे मासा **गोवीथि** नाम। कञ्चातुलसङ्खातो[8] पोट्ठपादो अस्सयुजो[9] चाति द्वे मासा **नागवीथि**। विच्छिकधनुसङ्खातो कत्तिको मिगसिरो[10] चाति द्वे मासा **अजवीथि** नाम। उत्तरायनेपि मकारकुम्भसङ्खातो फुस्सो माघो चाति द्वे मासा **अजवीथि** नाम। मिन्नमेस्ससङ्खातो[11] फग्गुणो[12] चित्तो चाति द्वे मासा **नागवीथि** नाम। पस्सुमेथुनसङ्खातो[13] विसाखो जेट्ठो चाति द्वे मासा **गोवीथि** नामाति। तथापि विच्छिको धनु मकरो कुम्भो ति चत्तारो

---

1 बो. बाहिरवीथियन्ततो
2 बो. पविसित्वा
3 तिरियं गमनं दक्खिणदिसतो उत्तरदिसाय, उत्तरदिसतो च दक्खिणदिसाय गमनं दन्धं छहि छहि मासेहि इज्झनतो। दी.नि.टी. 3.39
4 टो. विधिविनिच्छये. टो. में सर्वदा विधि. प्रस्तुत पाठ में बो. के अनुसार वीथि.
5 लौ. ०मज्झं
6 टो. कक्कटसि सङ्खातो
7 टो. सरवण्णो
8 टो. कन्या०
9 टो. अस्सयुज्जि
10 टो. मीगसिरो
11 बो. मीनमिस्ससङ्खातो
12 टो. बलगुणो
13 बो. ०मेधुन०

मासा **अजवीथि** नाम। कञ्ञा[1] तुलो मीनो मेस्सो[2] ति चत्तारो मासा **नागवीथि** नाम। कक्कटो सीहो पेस्सु[3] मेधुनो[4] चाति चत्तारो मासा **गोवीथि** नामाति दट्ठब्बा।

पकतिमग्गतोति तुलतो विच्छिके धनुम्हि चाति सङ्कन्ते अधो ओतरित्वा चरति। मकारे कुम्भे च उद्धं आरूहित्वा **[बो[14]]** चरति। तेनाह, अजवीथि आरूहन्तीति पकतिमग्गतोति कुम्भतो मीने मिस्से च उद्धं आरूहित्वा कञ्ञाय तुले च अधो ओतरित्वा चरति।[5] कक्कटे सीहो च अधो ओतरित्वा[6] पस्सुम्हि मेधुने[7] च उद्धं आरूहित्वा चरति। तेनाह उद्धं अरोहन्तो[8] अधो अनोतरन्तोति विसमं परिवत्तन्तीति इदं। सपगति[9], वङ्कगति, अतिवङ्कगति, कुटिलगति, सिङ्गगति[10], मन्दगति पञ्चगतियो सन्धाय वुत्तं। समं परिहरन्तीति समगति सन्धाय। तथा हि चन्दिमसुरिया राजूनं धम्मिका काले[11]। अस्सवणी भरणी कत्तिका रोहणी फलग्गुणी[12]-द्वयं माघो स्वाति सरवण्णो[13] धनसिट्ठो[14] सतविसो[15] भद्दद्वयं[16] रेवती[17] चाति चुद्दस नक्खत्तानि दक्खिणतो कत्वा; मिगसिरो अद्दो[18] अस्सलिसो[19] हत्थो चित्तो विसाखो अनुराधो

---

1 टो. कन्या
2 बो. मिस्सो
3 बो. पसु
4 बो. मेधुनुनो, लौ. मेथुन
5 बो. +। कञ्ञाय तुले च अधो ओतरित्वा चरति।
6 बो. ०चरति।
7 बो. मेथुने
8 लौ. अनारोहन्तो
9 बो. समगति; लौ. विसमगतिं
10 बो. सीघगति
11 बो. धम्मिककाले
12 टो. बलगुणी, लौ. फग्गुणी,
13 लो. सवणो
14 बो. धनसिद्धो
15 लौ. सतभिसजो
16 टो. भद्रद्वयं
17 टो. येवती
18 टो. भद्रो
19 लौ. असिलेसो

जेट्ठो मूलो आसाळ्हद्वयञ्चाति एकादस नक्खत्तानि वामतो कत्वा [**टो**[207a]] पुनब्बसु[1] फुस्सानि[2] पन मज्झे कत्वा चरन्ति[3]। तेसं अत्थि[4] अधम्मिककाले पन विपरियायेन चरन्तीति।

[वीथिविनिच्छयो निट्ठितो।]

[6. अयनविनिच्छयो]

[बो[15]**]** अयनविनिच्छये[5] पन 'चन्दिमसुरिया[6] छमासे सिनेरुतो बहि निक्खमन्तीति'[7] इदं वचनं सोतपतितवसेन वुत्तं। चन्दिमा हि अड्ढमासे सिनेरुतो बहि निक्खमति। अड्ढमासे अन्तो चरति। सुरियो[8] पन छमासे सिनेरुतो बहि तिरिया गमनेन[9] निक्खमति, छमासे अन्तो चरति। तथा हि कक्कटादिधनुपरियन्तं दक्खिणायनं नाम। मकरादिमेथुनपरियन्तं उत्तरायन-नामाति **जोतिसत्थेसु** वुत्तत्ता। दक्खिणायने ताव सुरियो[10] कक्कटसीहसङ्खाते आसळ्हो[11] सवणोति[12] द्वे मासे सिनेरु समीपेन[13] चक्कं अधो ओतरित्वा निक्खमित्वा चरति। ततो कञ्जातुलसङ्खाते पोट्ठपादो

---

1 टो. पुन्नफुस्स्हु
2 टो. पुस्सानि
3 बो. चरति
4 बो. अनुपलब्ध
5 टो. अनयविनिच्छये
6 टो. चन्दिमसूरिया
7 देखें, चन्दिमसूरिया छमासे सिनेरुतो बहि निक्खमन्ति, छमासे अन्तो विचरन्ति। दी.नि.अट्ठ. III.46.
8 टो. सूरियो
9 लौ. तिरियङ्गमनेन
10 टो. सूरियो
11 लौ. आसाळ्हो
12 टो. सयवण्णोति, बो. सर्वण्णोति, लौ. सवणोति
13 टो. समिपे

अस्सयुजो[1] चाति द्वे मासे बहि निक्खमित्वा चक्कं ओतरित्वा मज्झे चरति[2]। ततो विच्छिकधनुसङ्खाते कत्तिको मिगसिरो चाति द्वे मासे च चक्कं[3] अधो ओतरित्वा बहि निक्खमित्वा चक्कवाळसमीपेन चरति। उत्तरायने पन मकरकुम्भसङ्खाते[4] फुस्सो माघो चाति द्वे मासे चक्कमुद्धं अभिरूहित्वा अन्तो पविसेत्वा चक्कवाळ-**[बो[16]]**-समीपेन चरति। मीनमिस्ससङ्खाते[5] फलग्गुणो[6] चित्तो चाति द्वे मासे उद्धमारूहित्वा[7] पविसेत्वा चरति [।] ततो पस्सु-मेथुनसङ्खाते विसाखो जेट्ठो चाति द्वे मासे उद्धमारूहित्वा पविसेत्वा[8] सिनेरुसमीपेन[9] चरतीति दट्ठब्बं। तस्स सिनेरुस्स च यं ठानं ति एत्थ तस्साति मज्झिमस्स इदं वुत्तं होति।

सिनेरुचक्कवाळसद्देहि[10] अवधिभावेन उपलक्खितो आकासविसेसो तेहि वुच्चतीति सिनेरुचक्कवाळपब्बतेहि यं पन चक्कवाळयोजनेन द्वे सतसहस्सानि छनवुति योजनानि तीणि गावुतानि चत्तालीस उसभाणि[11] चाति तं ठानं तेहि[12] वुच्चतीति दट्ठब्बं। एवं उपरिपि दट्ठब्बं।

न च सिनेरुस्स अग्गालिन्दं[13] अल्लिनाति एत्थ अग्गसद्दोआदि सद्दपरियायो अज्जतग्गे पाणुपेतं ति एत्थ निय[14] विय। आलिन्दसद्दो पन परिभण्डपरियायो। तस्मा पाकारसदिसत्ता सिनेरुस्स परिभण्डानि सत्तपब्बतानि व-**[टो[207b]]**-दति। अग्गो च

---

1 टो. अजयुज्जो
2 टो. सरति
3 बो. में अनुपलब्ध
4 टो. मतायकुम्भसङ्खाते
5 लौ. मीनमेससङ्खाते
6 टो. बलगुणो
7 टो. उद्धमायुहित्वा
8 टो. पवीसेत्वा
9 बो. सिनेरुसमीपे
10 टो. सिनेरुचक्कवाळसद्देति
11 बो. उसभानि
12 टो. तेति
13 टो. अग्गालिन्धं
14 बो. ति

सो आलिन्दो चाति अग्गालिन्दो **अस्सकण्णो** वुच्चति। अस्सकण्णं न च उपसङ्कमतीति अत्थो। चक्कवाळयोजनेन **[बो17]** चेत्थ -

अन्ततो याव अस्सकण्णा, अन्तरपरिमाणतो।
एकसतसहस्सञ्च, सहस्सानूनवीसति[1]।
अट्ठसतञ्च छसट्ठि, योजनं वीसतुसभं ति।। 12।।

[अयनविनिच्छयो निट्ठितो।]

[7. आलोकविनिच्छयो]

आलोकविनिच्छये तीसु[2] दीपेसुति[3] चन्दिमसुरियालोकस्स उपलक्खितस्स अञ्जस्स ठानस्स अभावतो[4] वुत्तं। एककाय[5] ...पे... वस्सानिति[6] इदं सुखावबोधनत्थं[7] चक्कवाळसङ्ख्या मण्डलं चतुभागं[8] कत्वा द्विसहस्स पञ्चसतञ्च सत्तासीति योजनानि द्वे गावुतानि च अधिकमुनं[9] वा गणनूपगं न होतीति ञायाछड्डेत्वा[10] वुत्तं। तेहि चक्कवाळपरियन्तेपि ओभासकरणतो एकेकाय दिसाय नवसतसहस्सानि [11]पञ्चसतानि सत्तासीति[12] योजनानि द्वे गावुतानि अन्धकारं विधमेत्वा आलोकं दस्सेन्तीति। यदेवं एकभागो अन्धकारो भवेय्य[13] तयो भागा

---

1 टो. सहस्सनुनचीसति
2 टो. तिसु
3 लौ. दीपेसूति
4 टो. आभावतो
5 बो. एकेकाय
6 बो. सानीति
7 बो. सुखाय बोधनत्थं
8 टो. चतुसागं
9 लौ. अधिकमूनं
10 बो. ञाणं छट्टेत्वा
11 बो. द्वेसहस्सानि0
12 टो. सत्तासिति
13 टो. भवय्य

आलोका भवेय्युन्ति। तं न[1] उपड्ढुपड्ढेयेव आलोककरणतो **[बो18]** तथा हि सुरियो मेस्सतुलं[2] सकन्तिकाले[3] अट्ठारस सतसहस्सानि पञ्चसहस्सानि एकसतं पञ्चसत्तति योजनानि चाति एत्थके ठाने आलोकं दस्सेति। तत्थको[4] अन्धकारो होति। दिवा तिंस नाडिका[5] तथा रत्तिया पन्नरस अंसके पन परिपुण्णे यदा दिवा नाडिका अधिका रत्ति नाडिका च हीना होति। तदा[6] सट्ठिसहस्सानि एकसतं द्वासत्तति योजनानि द्वे गावुतानि च दिवा अधिका होन्ति।

रत्तियं पन तत्थकानि[7] येव हीनानिति[8] इमिना नयेन सेसेसुपि हीनाधिकता दट्ठब्बा। यदा च रासिम्हि परिपुण्णे रत्तियं द्वेनाडिका[9] अधिका दिवा द्वेनाडिका ऊना[10] च होन्ति। तथा[11] रत्तियं एकसतसहस्सं वीसतिसहस्सानि तीणि सत्तानि पञ्चचत्तालीस योजनानि च अधिकानि दिवा पन तत्थकानियेव ऊनानीति[12] इमिना नयेन सेसेसुपि अधिका ऊनाव[13] दट्ठब्बा। तथा च कक्कटे सङ्कन्तिकाले एकवीसति सतसहस्ससानि छसट्ठिसहस्सानि द्वेसतानि दसयोजनानि[14] चेति एत्थके **[बो19]** ठाने [टो208a] आलोकं दस्सेति।

चुद्दस सतसहस्सानि चतुचत्तालीस सहस्सानि [15]एकसतं चत्तालीस योजनानि चाति एत्थके ठाने अन्धकारो होति। तस्मा दिवा छत्तिंस नाडिका[1] रत्तियं[2]

---

1 टो. थन्न
2 बो. मिस्सा तुल
3 बो. सङ्कन्तिकाले
4 लौ. तत्तको
5 टो. में दिवाति सानाटिका. लौ. ने सर्वत्र नादिका पाठ रखा है.
6 लौ. तथा
7 लौ. तत्तकानि
8 बो. हीनानीति
9 टो. द्वेनाधिका
10 बो. एवं लौ. में अनुपलब्ध
11 बौ. तदा
12 टो. एवं बो. उनानीति
13 बो. अधिका व उना व
14 टो. दस्सयोजनानि
15 बो. चाति0

पन चतुवीसति नाडिका होन्ति। तथा मकारे[3] सङ्कन्तिकाले चतुदस सतसहस्सानि चतुचत्तालीस सहस्सानि एकसतं चत्तालीस योजनानि चाति एत्थके ठाने आलोकं दस्सेति। एकवीसति सत सहस्सानि छसट्ठि[4] सहस्सानि द्वेसतं दस योजनानि चाति एत्थके ठाने अन्धकारो होति। तस्मा दिवा चतुवीसति नाडिका रत्तियं[5] छत्तिंस नाडिका च होन्ति। एवं सेसेसुपि दट्ठब्बं। द्वीसु दीपेसु सब्बत्थ ...पे... दस्सेतीति इमिनापि तमेव अधिप्पायं विवरति।[6]

[आलोकविनिच्छयो निट्ठितो।]

[8. उप्पत्तिविनिच्छयो]

उप्पत्तिविनिच्छये सुरियो मिन्नरासिम्हि[7] उत्तरपोट्ठपादनक्खत्तेन सद्धिं फलगुणिपुण्णमदिवसे[8] पातुभवति वुत्तं **छणुखाद्व/(छणुक)-टीकायं।** यदा ब्रह्मरवि पथमं कालकारको[9] अवितिण्णोति[10]। चन्दो पन तस्मिं येव मासे दिवसे च कञ्जारासिम्हि **[बो[20]]** उत्तराफग्गुनक्खत्तेन[11] सद्धिं पातुभवति। ततो[12] पभूति रत्ति

---

1 टो. नाटिका
2 टो. यत्तियं
3 लौ. मकरे
4 बो. चट्ठि
5 बो. रत्तिया
6 देखें, पुब्बविदेहानं पन अत्थङ्गमिते न पञ्ञायतीति द्वीसु दीपेसु सब्बत्थ अन्धकारं विधमित्वा आलोकं दस्सेति अपरगोयानेपि उग्गते सूरिये सब्बत्थ अन्धकारविधमनतो। सारत्थदीपनी-टीका 1.233.
7 लौ. मीनरासिम्हि
8 बो. फलगुणी पुण्णमदिवसे रविदिने, लौ. फल्गुणीपुण्णमीदिवसे रविदिने. टो. में रविदिने अनुपलब्ध.
9 टो. पधपं कारको
10 टो. अवकिण्णोति
11 बो. उत्तरफलगुणीनक्खत्तेन
12 ट. तयो

दिवा पञ्ञायन्ति।

"पन्नरस रत्तियो अड्ढमासो, द्वे अड्ढमासा एको मासो, चत्तारो मासो एको उतु, तयो उतू संवच्छरो एवं मासवस्सादयो पञ्ञायन्ति इति" पाळि**अट्ठकथा**टीकादीसु[1] चेव **जोतिसत्थेसु** च उतुसमता आगता। न पन उतुभेदो केचि पन योजनभेदानं आकासे सट्ठिनाडिक[2]परिमाणरासीमण्डल-परिब्भमनस्स च तप्पटिबद्धगतनक्खत्ततारस्स[3] च अदिट्ठत्ता तेसु अपरिचयत्ता च अत्तनो कतगन्थेसु उतुभेदं वदन्ति। तं तेसं मतिमत्तमेव। यदि हि[4] तेसं मते उतुभेदो सिया तदा सुरियो मेथुनेन वा कक्कटेन वा सद्धिं उत्तरपुब्बदिसाय उदयित्वा ततो अञ्ञेहि मीन्नमिस्सेहि सद्धिं मज्झन्तिको हुत्वा धनुना वा मकारेन वा सद्धिं पच्छिमदक्खिणदिसाय अत्थङ्गमितो सिया। ततो धनुना वा मकारे-[टो[208b]]-न[5] वा सह पुब्बदक्खिणतो उदयित्वा ततो अपरेन[6] कञ्ञाय [**बो**[21]] तुलेन वा सद्धिं मज्झन्तिको हुत्वा मेथुनेन[7] वा कक्कटेन वा सद्धिं पच्छिमुत्तरदिसाय अत्थङ्गमितो सिया। तथा न होति। तथा हि सुरियो मिन्नेन वा कञ्ञेन[8] वा सद्धिं उत्तरदिसतो उदयित्वा तेहि सहेव मज्झन्तिको होति। तेहि एव पच्छिमुत्तरदिसाय अत्थङ्गमितो होति। तेहि[9] सद्धिं अड्ढरत्तिको होति। तेहि सहेव पुन उत्तरपुब्बदिसाय उदेतीति। तथा च सुरियो तुलेन वा मेसेन वा सद्धिं पुब्बदिसाय उदेति। तेहि एव मज्झन्तिको होति, तेहि पच्छिमदिसाय अत्थङ्गमितो, तेहि सद्धिं अड्ढरत्तिको, तेहि एव[10] पुन उत्तरपुब्बदिसाय[11] उदेतीति।

---

1 अथ पञ्चदस रत्तियो अड्ढमासो, द्वे अड्ढमासा मासोति एवं मासड्ढमासा पञ्ञायिंसु। अथ चत्तारो मासा उतु, तयो उतू संवच्छरोति एवं उतुसंवच्छरा पञ्ञायिंसु। दी.नि.अट्ठ. III.46.

2 टो. सट्ठिनाडिक

3 टो. ०नक्खात्तसारस्सच, लौ. दुप्पटि०

4 टो. मतिमत्तमवयदिहि

5 टो. मकायेन वा

6 टो. अपयेन

7 टो. मेधुनेन

8 टो. कन्नेन

9 टो. में अनुपलब्ध

10 बो. में अनुपलब्ध

11 बो. पुब्बदिसाय

तथा च सुरियो धनुना वा मकरेन[1] वा सद्धिं पुब्बदक्खिणदिसाय उदेति। तेहि सहेव दक्खिणदिसाय मज्झन्तिको। तेहि सद्धिं पच्छिमदक्खिणदिसाय अत्थङ्गमितो। तेहि सहेव अड्ढरत्तिको। तेहि एव सद्धिं पुब्बदक्खिणदिसाय पन उदेतीति एवं सेसेसुपि दट्ठब्बं।

[**बो**[22]] इदानि सब्बानि पेतानि सम्पिण्डेत्वा विसेसतो दस्सेतुं यस्मा चेत्थाति आदिमाह। एत्थ च एवं विनिच्छयो वेदितब्बो। पञ्चरतन-परिमाणयट्ठिया कतं अयनयोजनं नाम। दसहत्थपरिमाणयट्ठिया कतं सिनेरुयोजनं नाम। वीसरतनपरिमाणयट्ठिया कतं चक्कवाळयोजनं नामाति। एतानि तीणि योजनानि सुत्तन्तपाळियट्ठकथादीसु चेव इध आगतानि होन्तीति।

पञ्चरतनयट्ठिया, कतं अयनयोजनं।
दसरतनयट्ठिया[2], कतं सिनेरुयोजनं।
वीसरतनयट्ठिया, कतं च चक्कवाळकं।। 13।।

मूलाय हि एतेसु योजनेसु टीकायं दोसं अभिरोपयन्ति। तस्मा हि धीरा[3] साधवोनिधाय[4] लक्खेथ साधु विविधानिमानिति।

सिनेरुपतिट्ठितोकासे चतुरासीति सहस्सानीति इदं चक्कवाळयोजनवसेन वुत्तं। सिनेरुयोजनेन पन अट्ठसट्ठिसहस्साधिकानि [**बो**[23]] सतसहस्सानि होन्तीति **सम्मोहविनोदनियं सुत्तन्तट्ठकथा**दीसु च वुत्तं। इमिस्सा दक्खिणदिसायपि विसेसो वेदितब्बोति सम्बन्धो। सि-[टो[209a]]-नेरुचक्कवाळानं अन्तरं[5] अद्धानपरिमाणतो चक्कवाळयोजनेन पञ्चसतसहस्सानि पञ्चदससहस्सानि नवसहस्सानि सत्तसतानि[6] पञ्चवीसति योजनानि विञ्ञेय्यानीति अत्थो चक्कवाळसद्देन चेत्थ चक्कवाळपब्बतो

---

[1] टो. मकायेन
[2] लौ. देस०
[3] टो. धिया
[4] बो. साधयोनिधाय
[5] टो. अन्तर
[6] टो. सतसहस्सानि

वुत्तो। चन्दिमसुरियगमनट्ठानं दस्सेतुं मज्झवीथीति[1] आदिमाह। तत्थहि[2] तत्तके[3] ठाने यदा[4] रवि[5] सुरियो वेमज्झगो ति सिनेरुचक्कवाळानं मज्झे एव गतो होति। तदा मज्झिमवीथियं[6] गतो नाम होति। अञ्ञानि[7] पि सुरियगमनठानानि दस्सेन्तो मज्झतो एव यट्ठिपरिमाणकिच्चानि कत्तब्बा[8]। न पन सिनेरुतो वा चक्कवाळतो वा दस्सेतुं मज्झतो यावाति आदिमाह। एत्थ च[9] सिनेरुचक्कवाळसद्देहि अवधिभावेन[10] उपलक्खितब्बत्ता अञ्ञस्सावधिनो अलब्भमानत्ता असुत्ता[11] च युगन्धरपमाणतो[12] आकासो पथवितो [**बो24**] पट्ठाय द्वाचत्तालीस[13] सहस्सयोजनानीति एवमुच्चो आकासोव वुच्चति। तस्मा पञ्चरतनपरिमाणयट्ठिया कतं अयनयोजनमेव एत्थ अधिप्पेतं[14]। न पन चक्कवाळयोजनन्ति अत्थो। याव मज्झतोति मज्झतो एव पट्ठाय। याव मेरुम्हाति तब्बचनिया आकासा। याव चक्कवाळा चाति तब्बचनिया आकासा च। एत्थके अन्तरे यदि वेमज्झगोति एकन्तेन मज्झे गतो होति।[15]

तदा उभयन्तगतोति [16]उभयेसु अन्तेसु गतो होतीति अत्थो। मज्झतो सिनेरुचक्कवाळानमन्तरे कती योजनानीति आह मज्झतोति। आदितो पट्ठाय चक्कवाळयट्ठिया अट्ठकथादीसु अतिपसिद्धत्ता[17] सहस्समेतन्ति[1] वक्खमानत्ता च

---

1 टो. मज्झिविधिति
2 टो. तत्थाहि
3 टो. तत्थके
4 टो. यथा
5 टो. यवि
6 टो. मज्झविथियं
7 बो. अञ्जनि
8 बो. कत्तब्बानि
9 बो. में अनुपलब्ध
10 बो. अधिभावेन
11 लौ. एसितत्ता, बो. असुतत्ता
12 टो. युगन्धरपमाणो
13 टो. द्वाचत्तारि
14 टो. वत्ताधिप्पेतं
15 टो. पाठ इस प्रकार है।
16 टो. तदा
17 बो. ०च

पञ्चरत्न परिमाणा यट्ठिगते तब्ब[2] तत्थ मज्झतो पट्ठाय याव मेरुम्हा आकासा चक्कवाळा च पब्बता आकासा च अयनयोजनेन[3] दुवे सतसहस्सानि सत्तदससहस्सानि नवसहस्सानि अट्ठसतं द्वासट्ठियोजनं द्विगावुतञ्च विञ्ञेय्याति[4] अत्थो। [**बो[25]**] उभतो अन्ततो मेरुचक्कवाळानमन्तरं कति योजनप्पमाणन्ति आह[5] उभतो मेरुचक्कवाळातिआदिं उभतो अन्त-[टो[209b]]-तो मेरुचक्कवाळानमन्तरं अयन-योजनेन एतं[6] सतसहस्सञ्च तीणि दससहस्सानि नवसतानि एकादसयोजनानि गावुतञ्च विञ्ञेय्याति अत्थो।

चक्कवाळयोजनेन पन मज्झतो पट्ठाय तानि मेरुचक्कवाळतब्बचनियानि आकासानि तीणि दससहस्सानि चत्तारि सहस्सानि नवसतानि[7] द्वासीतियोजनानि तीणि गावुतानि वीसति उसभानि[8] च होन्ति। अन्तद्वयतो पन याव मेरुम्हा चक्कवाळा च चक्कवाळयोजनेन द्वेसतसहस्सानि चत्तारि सहस्सानि अट्ठसतानि नवसत्तति योजनानि द्वे गावुतानि सट्ठि उसभानि होन्तीति दट्ठब्बं।

होति चेत्थ :

मज्झतो याव अन्ता च, अन्तरं परिमाणतो।
तीणि दससहस्सानि, चत्तारि सहस्सानि च।। 14।।
नवसतानि द्वासीति, योजनानीति गावुतं।
चक्कवाळयोजने, वीसति उसभाधिकन्ति।। 15।।

तथा च

उभतो अन्तमे[9], चक्कवाळानमन्तरं[10]।

---

1 ट. सहस्समेकन्ति
2 बो. अनु. वक्खमानत्ता च पञ्चरत्न परिमाणा यट्ठिगते तब्ब
3 टो. अययोजनेन
4 बो. विञ्ञेय्यानीति
5 टो. आय
6 बो. एक
7 टो. नवसतानि नवसतानि
8 टो. उसथानि
9 बो. अन्ततो
10 बो. मेरुचक्कवाळानमन्तरं

दुवे सतसहस्सानि, चतुतालीससहस्सं।। 16।।
अट्ठसतं सत्तति च, नव योजन [बो[26]] द्वि[1] ति गावुता।
चक्कवाळयोजनेन, सट्ठि उसभमुत्तरन्ति।। 17।।

इदानि द्वादस रासीमण्डलं मज्झवीथिमण्डलेन[2] परिमानेतुं मज्झ-वीथिया पमाणं दस्सेति। "पमाणतोति आदिना मज्झवीथिया" मण्डलं समन्ता च पमाणतो चक्कवाळयोजनेन दससतसहस्सानि नवसतसहस्सानि तीणि सतसहस्सानि[3] एकसहस्सं[4] एकसतं पञ्चसत्तति योजनमुत्तरन्ति विञ्ञेय्यन्ति अत्थो। इदानि परिमेय्यरासीमण्डलेन विना सुरियस्स गमनाभावं[5] विभावेतुं दक्खिणन्ति आदिमाह। तत्थ भाणुमा सुरियो दक्खिणंति दक्खिणायनं। उत्तरं उत्तरायनञ्च। गच्छन्तो पन मज्झवीथिपमाणेन मण्डलेन वा ति सट्ठि नादिका परिमाणेन द्वादसरासीमण्डले[6] सहेव गच्छन्ति। न पन तेन रासीमण्डलेन विना यथा तथा वा गन्तुं सक्कोन्तीति अत्थो।

ककटादिधनुपरियन्तं दक्खिणायनं नाम। ककट-सीह-कञ्ञा[7]-तुल-विच्छिक-धनु-चाति मकरादि-[**बो[27]**]-मेथुन-परियन्तं उत्तरायनं नाम। मकर-कुम्भ-मीन[8]-मेस[9]-पेस्स-मेथुनञ्चाति चक्के ठिता तारा-[टो[210a]]-योति च चक्कमण्डलन्ति[10] **जोतिसत्थेसु** वुत्तं। यं पन सिनेरुस्स उत्तरतो मेथुनककटानमन्तस्स सिनेरुस्स

---

[1] बो. में अनुपलब्ध
[2] टो. में सर्वदा 0वीधि0
[3] टो. तिनिदससहस्सनि
[4] टो. एकसहस्सनि
[5] टो. गमनाभाव
[6] टो. द्वादसरासीमण्डलेव
[7] टो. कन्या
[8] टो. मिन
[9] टो. मेस्स
[10] टो. चक्केमण्डलन्ति

दक्खिणतो धनुमकरानमन्तस्स समन्ततो[1] ठानमण्डलं मज्झिममण्डलेन समपमाणं होति। तं ठानं तस्स चक्कस्स ठानन्ति गहेतब्बं।

तथा हि दक्खिणायनं ताव मेरुतो अतिदूरं अतिवङ्कं दीघञ्च होति। तस्मा ककटो रासी पञ्च नाडिका[2] परिमाणो। सीहो छ, कन्या[3] सत्त, तुलो सत्त, विच्छको[4] छ, धनुरासी पञ्च नाडिका परिमाणोति छत्तिंस नाडिकपरिमाणं। उत्तरायनं पन मेरुतो नातिदूरं[5] नातिवङ्कं रस्सञ्च होति। अतो येव च मकाररासी ति[6] नाडिकपरिमाणो। कुम्भो चतु, मीनो पञ्च, मेसो पञ्च[7], पस्सु[8] चतु, मेथुनो[9] ति नाडिकपरिमाणोति चतुवीसति नाडिकपरिमाणं होति। तं मण्डलं सट्ठिनाडिकपरिमाणं होतीति दट्ठब्बं।

[**बो**[28]] तस्मा[10] पन रासीमण्डलेन विना गन्तुं न सक्कोतीति धम्मता भूतत्ताय मण्डलेन सुरियादिगहेहि सद्धिं तस्स चक्कस्स परिवत्तापयमानेन[11] पमाणतो। वुत्तं हि **जोतिसत्थेसु** : "लङ्कादीपगुणा[12] यदा चक्कं अपरं मुखं भमति दुप्पटिबद्धा च सब्बे एव गहा परिब्भमन्तीति च। उदयत्थङ्गमननिमित्तं निच्चं चक्कमानेन[13] वायुना खित्तो तु लङ्कादीपमज्झिमसो उभयन्तरञ्च गतो समतीति च"।

तथा हि सुरियो यदा मासं मेस्सरासिना सहेव उत्तरकुरुम्हि पच्छिमदिसायं[14] अत्थङ्गमितो होति। पुब्बविदेहे मज्झन्तिको होति। इध[1] जम्बुदीपे

---

[1] बो. + यं पन
[2] बो. नदिका, लौ. नादिका
[3] लौ. कञ्या
[4] बो. एवं लौ. विच्छिको
[5] बो. दूरो
[6] लौ. मकररासीति
[7] बो. एवं लौ. चतु
[8] लौ. पसु
[9] टो. मेधुनो
[10] बो. एवं लौ. कस्मा
[11] बो. एवं लौ. परिवत्तमयमानेन
[12] बो. लङ्कादीपगुणं
[13] टो. चकमाने; लो. चक्कमनेन
[14] टो. पच्छिमदिसाय

पुब्बदिसाय[2] उदेति। तथा[3] मकाररासी दक्खिणदिसायं मज्झन्तिको होति। तुलरासी दक्खिणदिसायं मज्झन्तिको होति।[4] तुलरासी पन पच्छिमदिसायं अत्थङ्गमितो होति। अपरगोयानदीपे मज्झन्तिको च होति।

कक्कटरासी पन उत्तरदीपे मज्झन्तिको होति। यदा पन सो मेस्सरासिना व पुब्बविदेहे पच्छिमदिसायं [**बो29**] अत्थङ्गमितो इध जम्बुदीपे मज्झन्तिको अपरगोयाने पुब्बदिसायमुदितो[5] च होति। तदा इध जम्बुदीपे मकाररासी दक्खिणपच्छि-[टो210b]-मदिसायं अत्थङ्गमितो होति। अपरगोयानदीपे[6] दक्खिणदिसायं मज्झन्तिको च होति। तुलरासी पन उत्तरदीपे मज्झन्तिको[7] कक्कटरासी च विदेहदीपे मज्झन्तिको होति। यदा पन सो मेस्सरासिना सद्धिं इध दीपे दक्खिणपच्छिमदिसायं अत्थङ्गमितो। अपरगोयानदीपे मज्झन्तिको उत्तरदीपे पुब्बदिसायमुदितो च होति। तदा मकाररासी उत्तरदीपे दक्खिणदिसायं मज्झन्तिको। तुलरासी विदेहदीपे मज्झन्तिको। कक्कटरासी इध दीपे मज्झन्तिको च होति। एवं सेसेसुपि दट्ठब्बं।

तथा च यदा सुरियो कक्कटरासिना सद्धिं विदेहदीपे मज्झन्तिको इध दीपे तेनेव सद्धिं उत्तरपुब्बदिसायमुदितो च होति। तदा मेस्सरासी इध दीपे मज्झन्तिको मकाररासियं दक्खिणदिसायं अत्थङ्गमितो। गोयाने[8] मज्झन्तिको तुलरासी पन उत्तरकुरुम्हि मज्झन्तिको च होतीति[9]। तदा पन सो कक्कटेन सह उत्तरदीपे पच्छिमुत्तरदिसायं[10] अत्थङ्गमितो होति। यदा पन सुरियो कक्कटेन[11] [**बो30**] व[1] सहेव

---

[1] टो. इद
[2] टो. सुप्पटिसाय
[3] टो. तथा
[4] बो. एवं लौ. में अनुपलब्ध
[5] टो. पुब्बदिसायपुदितो
[6] टो. अपरगोयानं दीपे
[7] बो. + होति।
[8] बो. अपरगोयाने
[9] बो. होति
[10] टो. ०दिसाय
[11] टो. कक्कटे

विदेहदीपे पच्छिमुत्तरदिसायं अत्थङ्गमितो। इध दीपे मज्झन्तिको गोयाने उत्तरपुब्ब-दिसायमुदितो[2] च होति। तदा मेस्सरासी गोयाने मज्झन्तिको मकाररासी उत्तरदीपे दक्खिणदिसायं मज्झन्तिको। तुलरासी विदेहे मज्झन्तिको होति। सो च कक्कटेन सहेव विदेहे पच्छिमुत्तरदिसाय अत्थङ्गमितो च होति। यदा पन सो कक्कटेन सहेव इध दीपे पच्छिमुत्तरदिसायं अत्थङ्गमितो। गोयाने मज्झन्तिको उत्तरदीपे उत्तरपुब्बदिसायं उदितो होति। तदा मेस्सरासी उत्तरदीपे मजझन्तिको मकाररासी विदेहे दक्खिणदिसायं मज्झन्तिको तुलरासी इध दीपे मज्झन्तिको[3]। इमिना च[4] नयेन सेसरासीसुपि यथारहं दट्ठब्बं।

सुरियस्स पन उजुगमनं सीघं, तिरियं गमनं दन्धञ्च होति।[5] तस्मा हेट्ठा ओलम्बन्तो रासीमण्डलो तं सुरियं दिने दिने मण्डलयोजनेन अट्ठसहस्सानि तीणि सतानि तेवीस योजनानि गावुतं छवीसति उसभानि तेरस यट्ठियो चत्तारि रतनानि अट्ठङ्गुला-[टो[211a]]-नि च अतिक्कमति होति चेत्थ।

अट्ठसहस्सं तिसतं, तेवीस योजनानि च।
गावुतं [बो[31]] छवीसति, उसभं तेरस यट्ठियो तथा।। 18।।
चतुरतनट्ठङ्गुलं, सुरियं रासीमण्डलो।
अतिक्कन्तो सदा हेट्ठा, ओलम्बन्तो परिब्भमतीति।। 19।।

यस्मा पन सुरियो अतिक्कन्तस्स[6] मण्डलस्स अद्धानमेव सुरियस्स अंसको होति इतो उनं पन लित्ता होति। यथा वुत्तेन तिंस रत्तीसु दिवा रासि परिपुण्णा होन्ति। तदा[7] रासी नाम होति। तस्मा सुरियस्स अतिक्कन्तस्स[1] मण्डलस्स अद्धानमेव

---

1 बो. पाठ में अनुपलब्ध
2 बो. उत्तरदिसायमुदितो
3 बो. + च।
4 टो. च
5 सारत्थ.टी. 1.229.
6 टो. मतिक्कन्तस्स
7 लौ. तथा

सुरियस्स लित्ता अंसको रासी चाति वदन्ति। इदं पन इमस्मिं **मरम्मदेसे** सब्बेपि नेमित्तका आकासे चक्क-नक्खत्तचारेसु[2] अपरिचयभावतो[3] येव न जानन्तीति। यदि सुरियस्स मज्झवीथिपमाणेन रासीमण्डलेनेव गमनं सिया। तदा हेट्ठा ततो[4] परं पटिपददिवसे योजनानं सतसहस्सं चन्दमण्डलं ओहाय गच्छतीति आदिवचनेन पन विरुज्झनतो रासीमण्डलस्स अद्धानरस्सता सियाति आह गच्छन्तो चाति आदि। एवं यथा वुत्तं दक्खिणायनं उत्तरायनञ्च मज्झवीथिपमाणेन मण्डलेनेव गच्छन्तोपि सो भाणुमा छमासे मण्डलस्सु-[**बो32**]-पड्ढं[5] दक्खिणायनं सब्बदा दिने दिने हेट्ठतो ओरुय्य बहि निक्खमित्वा च यतो गच्छति। तथा छ मासे मण्डलस्सुपड्ढं[6] उत्तरायनं सब्बदा दिने दिने उद्धं आरुय्य आरुय्य अन्तो पविसेत्वा पविसेत्वा गच्छतीति अत्थो।[7]तथा हि[8] मेथुनकक्कटानं अन्तरं[9] उपरिमं धनुमकरानमन्तरञ्च हेट्ठिमं तस्स मन्तरं तीणिदससहस्सानि सत्तसहस्सानि छसतानि[10] पञ्चास[11]योजनानि च होन्ति। तस्मा सुरियो छमासे दिने दिने मण्डलस्स उपड्ढदक्खिणायनं हेट्ठतो द्वेसतानि नवयोजनानि तेपञ्चासउसभानि। छ यट्ठियो[12] छ रतनानि[13] विदत्थि चतुरङ्गुलानि चाति एत्थकमेव[14] ओरुय्ह[15] ओरुय्ह[1] तत्तकमेव[2] छमासे दिने दिने मण्डलस्सुपड्ढं[3] उत्तरायनं उद्धं आरुह्य आरुह्य गच्छतीति[4]।

---

[1] टो. सुरियस्स मतिक्कन्तस्स. लौ. सुरियमतिक्कन्तस्स
[2] लौ. ०कारेसु
[3] टो. अपरिचरियभावतो
[4] बो. हेट्ठातो; लौ. हेट्ठतो
[5] बो. मण्डलस्स उपड्ढं
[6] टो. मण्डलस्सुपड्ढ; बो. मण्डलस्स उपड्ढं
[7] बो. पारा बदल दिया है
[8] टो. तत्थाहि
[9] टो. ०कक्कटानन्तरं
[10] बो. अनुपलब्ध
[11] बो. पञ्चस
[12] टो. सट्ठियो
[13] बो. रतनं
[14] बो. एत्थमेव
[15] टो. ओयूय्ह, बो. ओरुय्य

होतिचेत्थ:

हेट्ठिमुपरियन्तानं, अन्तरपरिमाणतो।
सत्ततिंस सहस्सानि, छसतं [टो.211b] पञ्चास योजनन्ति।। 20।।

तथा च:

द्विसतं नवयोजनं, ते पञ्चासञ्च उसभं।
छयट्ठि च छरतनं, विदत्थि चतुरङ्गुलं।। 21।।

[बो33] **छमासे सुरियो हेट्ठा, चक्कङ्गं दक्खिणायनं।**
अनुसारेन ओरुय्ह[5]**, गच्छति दिने दिने।। 22।।**
तथा आरुय्हति[6] उद्धं, चक्कङ्गं उत्तरायनंति।
निक्खमित्वा पविसेत्वाति च, तिरियगमनं वुच्चति।। 23।।

तं पन अयनयोजनन्ति[7] गहेतब्बं अयं अत्थं वुच्चति।

रवि छमासे तिरियं, मेरुतो बहि निक्खमि।
दिने दिने पविसति[8], अन्तो च चक्कवाळतो।। 24।।
सहस्समेकं पञ्चसतं, चतुपञ्चासयोजनं।
तिगावुतं तेरसुसभं, तेत्तिंस रतनानि च।
अट्ठङ्गुलानि तिरियं, गच्छतेकदिने रवि ति।। 25।।[9]

---

[1] टो. ओरूय्ह, बो. ओरुय्य
[2] बो. तत्थ कमेव
[3] बो. मण्डलस्स उपङ्गं
[4] बो. + होति। एत्थ
[5] बो. ओरुय्य
[6] टो. आहति; बो. आरुय्यति
[7] टो. अयनं योजनं ति
[8] टो. हि सेति; बो. पवीसति; लौ. पविसति
[9] स्रोत, वि.पि. सारत्थदीपनी टीका. 1.234. लोकप्पदीपकसार में भी उद्धरित.
सहस्समेकं पञ्चसतं, चतुपञ्ञासयोजनं।
तिगावुतं तेरसूसभं, तेत्तिंस रतनानि च॥

ओरुय्ह[1] सब्बदाति[2]। एतेनेव हि[3] रासीमण्डलस्स ओलम्बन्त[4] परिब्भमनवसेन बाहिरवीथियन्ततो[5] अन्तोवीथियन्तस्स उद्धग्गंपि सामत्थियतो दस्सितं होति।

वुत्तं हि **सुत्तन्तपाळिअट्ठकथाटीका**दीसु **विसुद्धिमग्गटीका**यञ्च युगन्धर-पब्बतमत्थकसमपमाणे आकासे रवि चरणतो चक्कवाळपब्बतस्स वेमज्झे[6] चरतीति युगन्धरपमाणे आकासे चरतीति च।[7]

[8][**बो34**] ततो हि ओरुय्ह[9] ...पे... आरुय्ह[10] गमनत्था[11] अस्स सूरियस्स[12] गति-वसेन गतिया आगते[13] तन्ति यथावुत्तं रासीमण्डलं। दूरमद्धानन्ति दूर-अद्धानवन्तं, आसीति अहोसी, ञायतीति अत्थो। मकारो सन्धिवसेन आगतो। केचि पन आसितन्ति पदस्स पुन पटिबद्धन्ति अत्थं वदन्ति। तं तेसं मतिमत्तमेव। न हि ततोति इदं आसितस्स कारणं।

अथ खो[14] दूरमद्धानस्स[15] कारणं ति गहेतब्बं। तस्स पन रासीमण्डलस्स अद्धानं कति[1] योजनपमाणन्ति आह तिंससतसहस्सानीति। तस्स अद्धानस्स पमाणतो

अट्ठङ्गुलानि च तिरियं, गच्छतेकदिने रवि।
छतालीससहस्सानि, छ सतानि तिगावुतं॥

1 बो. ओरुय्य
2 लौ. सब्बदापि
3 बो. बहि
4 बो. ओलम्बन्ति
5 टो. में सर्वदा विधि
6 बो. वेमज्झेन
7 देखें अ.नि.टी. II.303, युगन्धरपब्बतमत्थकसमप्पमाणे आकासे विचरणतो ''चक्कवाळपब्बतस्स वेमज्झेन चरन्ती''ति वुत्तं।
8 पारा चेंज बोके के अनुसार. पाण्डुलिपि में पारा नहीं बदला है।
9 बो. ओरुय्य
10 बो. ओरुय्य
11 लौ. अमनत्ता, बो. अमनत्ता
12 बो. सुरियस्स
13 बो. यते
14 बो. को
15 लौ. दूरमद्धानस्स, बो. दूरद्धस्स, टो. दूरद्धस्स

योजनानि तिंससतसहस्सानि होन्तीति अत्थो। ननु मज्झवीथिमण्डलतो अन्तोवीथिमण्डलं अतिसम्बाधं। बाहिरवीथिमण्डलं पन अतिविसालं होति। तस्मा सट्ठिनाडिकपरिमाणतो उना वा अधिका वा नाडिका सियाति आह तस्माति आदि[2]। तस्माति सट्ठिनाडिकपरिमाणेन[3] द्वादस रासीमण्डलेन सद्धिं येव गमनत्ता सो सुरियो दिने दिने तत्तकं [टो.212a] वाति[4] रासीमण्डलयोजनपरिमाणं समं एवं। परितो यातीति समन्ततो सिनेरुं दक्खिणतो कत्वा परिवत्तति परिब्भमति चाति अत्थो।

[5][**बो**35] तत्तकं व दिने दिनेति एतेन सुरियस्स सट्ठिनाडिकपरिमाणेन रासीमण्डलेन परिब्भमनतो अन्तोवीथिबाहिरवीथिसु गच्छन्तस्सापि सट्ठिनाडिका हिना वा अधिका वा नाडिका न सियाति दस्सेति।

[6]किञ्चापि रथचक्कस्स नाभिमण्डलं अतिसम्बाधं परियन्ते[7] नेमिमण्डलं पन विसालञ्च होति। तथापि द्विन्नम्पि तेसं परिवत्तनं समानं होति। न च उनं[8] वा अधिकं वा परिवत्तनं होति। एवं इधपि[9] दट्ठब्बं।

[10]तथा हि सुरियो मेसरासिम्हि अस्सयुजनक्खत्तेन सद्धिं तेरस दिनानि वीसतिनाडिका च उत्तरकुरुम्हि पच्छिमदिसायं[11] अत्थङ्गमितो पुब्बविदेहे मज्झन्तिको इध दीपे पुब्बदिसाया[12] उदितो। यदा पुब्बविदेहे[13] पच्छिमदिसायं अट्ठङ्गमितो इध दीपे मज्झन्तिको, गोयाने दीपे[14] पुब्बदिसायमुदितो च होति। इध दीपे

---

1 लौ. सति; बो. सति (?)
2 लौ. आदिं
3 लौ. सट्ठिनादिकपरिमाणेन
4 लौ. याति
5 बो. पारा चेंज
6 बो. पारा चेंज
7 बो. परियन्तेन
8 लौ. ऊनं
9 बो. +वीथि
10 बो. पारा चेंज
11 बो. पच्छिमदिसाय
12 बो. पब्बदिसाय, लौ. पुब्बदिसाय
13 टो. पुब्बविदेह
14 बो. अपरगोयानदीपे

पच्छिमदिसायं अत्थङ्गमितो गोयाने दीपे[1] मज्झन्तिको। उत्तरदीपे पुब्बदिसायमुदितो च होति। [**बो36**] यदा गोयानदीपे[2] पच्छिमदिसायं अत्थङ्गमितो उत्तरादीपे[3] मज्झन्तिको विदेहदीपे पुब्बदिसायमुदितो च होति। उत्तरकुरुम्हि पच्छिमदिसायं अत्थङ्गमितो विदेहे मज्झन्तिको इध दीपे पुब्बदिसायमुदितो च होति। तथा कक्कटरासिम्हि सो फुस्सनक्खत्तेन सह तेरसदिनानि वीसति[4] नाडिका च चतूसु दीपेसुपि[5] गच्छन्तो उत्तरपुब्बदिसासु[6] उदितो। पच्छिमुत्तरदिसासु अत्थङ्गमितो च होति। तथा मकाररासिम्हि सारवणन-नक्खत्तेन[7] सद्धिं तेरसदिनानि वीसति नाडिका च चतूसु दीपेसु गच्छन्तो पुब्बदक्खिणदिसासु गच्छन्तो दक्खिणदिसासु मज्झन्तिको दक्खिणपच्छिमदिसाय अत्थङ्गमितो च होतीति। इमिना नयेन सेसरासीसुपि सुरियागमनं दट्ठब्बं। सुरियस्स हि मेसादिकञ्चतेसु[8] छसु रासीसु[9] गमनकाले मज्झमण्डलतो उद्धत्ता उदितं अत्थङ्गमितञ्च अतिदूरतो व पस्सति। अतोयेव दिवा[10] ना-[टो212b]-डिका दीघा, रत्ति नाडिका पन रस्सा च होन्ति। छायापि च उदितो अत्थङ्गमासन्नकाले च [**बो37**] अतिदीघा होति। तुलादिमीनन्तेसु छसु रासीसु गमनकाले मज्झमण्डलतो निन्नत्ता उदितं अत्थङ्गमितञ्च अतिदूरतो व पस्सति। तस्मा दिवा नाडिका रस्सा, रत्ति नाडिका पन दीघा च होन्ति। छायापि उदिते अत्थङ्गमासन्नकाले च रस्सा होतीति।

होन्ति चेत्थ :

मेसतुले च सङ्कन्ति, दक्खिणे रत्ति दिवा समा।

---

1 बो. अपरगोयानदीपे
2 बो. अपरगोयानदीपे
3 बो. उत्तरदीपे
4 बो. तेवीसति
5 बो. दीपेसु
6 बो. उत्तरपुब्बदिसाय
7 लौ. सावणनक्खत्तेन
8 लौ. कण्णन्तेसु
9 बो. छरासीसु
10 टो. दीवा

दुतिये दिवसे हीना, नाडिका चतुनाडिका।। 26।।
अट्ठसतञ्च तेत्तिंस, योजना च तिगावुतं।[1]
छब्बीसति उसभानि, तेरस यट्ठियो तथा।। 27।।
पञ्चकरं अट्ठङ्गुलं, एत्तकं[2] व दिने दिने।
आलोको अन्धकारो वा, वड्ढति हायति सदाति।। 28।।

एवं लित्तावसेन मण्डलगमनं दस्सेत्वा इदानि अंसवसेन[3] तिरियगमनं[4] दस्सेतुं सहस्समेकन्ति आदिमाह।

पञ्च रतनपमाण यट्ठि एव गहेतब्बा। एत्थ च छमासयोजनसङ्ख्या पिण्डं असीताधिकदिनसतेन[5], तिमासयोजनसङ्ख्या[6] पिण्डं नवुतिया वा, द्विमासयोजनसङ्ख्यापिण्डं सट्ठियो वा, एकमासयोजनसङ्ख्यापिण्डं तिंसदिनेहि वा भाजितो सहस्समेकन्ति आदिं लद्धं होतीति दट्ठब्बं।

[**बो**[38]] एत्थापि सुरियस्स रासीचक्कानुसारेन तिरियगमनं दट्ठब्बं। एकदिनंति एकेकस्मिं दिनेति अत्थो। तेनाह दिने दिनेति। एवं अंसवसेन[7] तिरियगमनं सङ्ख्यापिण्डं दस्सेत्वा रासीवसे[8] तिरियगमनं सङ्ख्यापिण्डं दस्सेतुं छतालीसाति आदिमाह। छतालीस सहस्सानि छसतानि तेचत्तालीस योजनानि तीणि गावुतानि चाति एकेनेकेन[9] मासेहि गच्छतीति अत्थो। एवं एकमाससङ्ख्यापिण्डं दस्सेत्वा उतुवसेन द्विमासतिरियगमनसङ्ख्यापिण्डं दस्सेतुं तेनवुतीति आदिमाह। नवुति सहस्सानि तीणि सहस्सानि द्वे सतानि सत्तासीति योजनानि द्वे च गावुतानि

---

[1] लौ. अट्ठसतं चतुत्तिंस, योजना चतुगावुतं।
[2] बो. और लौ. एत्थकं
[3] लौ. अंसकवसेन
[4] बो. तिरिया गमनं, लौ. तिरियङ्गमनं
[5] बो. एवं लौ. असीत्याधिकदिनसतेन
[6] बो. एवं लौ. छमासयोजनसङ्ख्या
[7] बो. एवं लौ. अंसकवसेन
[8] बो. एवं लौ. रासीवसेन
[9] बो. एवं. लौ. द्वीहि

चाति द्वीहि द्वीहि[1] मासेहि गच्छतीति अत्थो। ब्यापनिच्छायं[2] आमेडितवचनं एवञ्चुपरि दट्ठब्बं।

दक्खिणायनतो च कक्कटसीहो च द्वे [टो213a] मासा वस्सकालउतु नाम। कञ्जातुलोचाति द्वे मासा सरदउतु नाम। विच्छिकोधनुचाति द्वे मासा हेमन्तकालउतु नाम। उत्तरायने पन मकरो कुम्भो चाति द्वे मासा सिसिरउतु[3]। मीन्नो मेस्सो चाति द्वे मासा वसन्तउतु। प्रिस्सो[4] मेधुनो[5] चाति [**बो39**] द्वे मासा गिम्हकालउतु नामाति दट्ठब्बं।

उतुवसेन सङ्ख्यापिण्डं दस्सेत्वा अयनवसेनापि दस्सेतुं इमायाति आदिमाह। इमाय गतियाति एवं भूताय गतिया अन्तो विधितो विधिमन्ति बाहिर विधिया अन्तिमविधि बाहीर विधिया अन्तं।[6] हिमवन्तपब्बतो तीणि सहस्सानि अट्ठसतानि पण्णास[7] योजनानि च अज्झुगतो[8] होति।

तिसहस्सं अट्ठसतं, पञ्ञासञ्चेव योजनं।
बाहिरवीथियाअन्तं, अज्झुग्गहिमसेलको[9]।। 29।।

बाहिरवीथिया[10] अन्तवीथितो[11] अन्तोवीथियाअन्तवीथि च छमासेहि गच्छति पापुणाति। तिहि[12] मासेहि च मज्झिमं[1] गच्छतीति अत्थो। इदानि सुरियस्स

---

1 बो. द्वीहि
2 लौ. पयापनिच्छयं
3 बो. सिसिरि उतु
4 बो. परिस्सो, लौ. पसु
5 लौ. मेथुनो
6 बो. इमायाति एवं भूताय गतिया अन्तो वीथिया अन्तो वीथितो वीथिमन्ति बाहिरवीथिया अन्तिमं वीथि बाहिरवीथि अन्तं।
7 लौ. पण्णरस
8 बो. अच्चुग्गतं
9 बो. अच्चुग्गतं हिमसेलको
10 टो. बाहिरविधिया
11 टो. अन्तवीथितो
12 बो. छहि

देसन्तरचारिकं दस्सनत्थं सिनेरूति आदिमाह। सिनेरुसन्तिके अन्तवीथितो आगच्छन्तो भाणुमा[2] पन द्वीहि मासेहि अस्स दीपस्साति इमस्स सीहळदीपस्स मज्झगतो होतीति अत्थो। सिनेरुसन्तिके अन्तवीथि नाम मेधुन[3]कक्कटानमन्तरं वदति। तं पन जम्बुदीपे [**बो**40] मज्झे होति। अतोयेव सीहळदीपे मज्झन्तिके मनुस्सानं छाया दक्खिणतो दिसा द्वे पादिका होति। इध जम्बुदीपे पन पादमत्तिका अभाविता होति।

वुत्तं हि **आयुब्बेदे** :

कक्कटे सङ्क्रन्तिदिने[4], मज्झन्ते पादमत्तिका।
उत्तरभिमुखं ठस्स छाया, अभाविता होतीति।। 30।।

तं पन अग्गहेत्वा कक्कटे तिंस अहोरत्ते परिपुण्णे एकपादिका[5] वड्ढते। तथा सीहादीसुपि। मकरे पन सङ्क्रन्ति[6] छ पादिका होति। तिंस दिने सम्पुण्णे पन एकपादिका हायति। तथा कुम्भादीसुपि। एवं मासे मासे एकपादिकाय छायाय वड्ढनं खयञ्ञ[7] होति। तथा एकेकनाडिकाय खिणं वड्ढनञ्ञाति। वुत्तं हि सद्धि यो सङ्गमो मासे मासे एकेनेकेन पादेन वड्ढनं खयञ्ञाति।

तस्मा द्वादसरासीसु छपादिकमेव केन्द्ररं[8] ठपितं [टो213b] होति। न सत्त-पादिकं केन्द्ररं दट्ठब्बं। ननु चायं टीकाचरियो **सीहळ**दीपे निवासिताय अञ्ञदेसन्तरं [**बो**41] न[9] जानातीति। नो न जानाति। **गणिकजोतिसत्थेसु** पन देसन्तरकम्म

---

1 बो. मज्झिमं (पच्छिमं)
2 बो. भाणुम, लौ. भाणुमा
3 बो. मेथुन
4 टो. सकन्तदिने
5 बो. एकपदिका, लौ. एकपादिका
6 टो. सकन्ति
7 बो. खयञ्ञ (न)
8 लौ. केनदरं
9 बो. अनुपलब्ध

अधिकुसलताय[1] पट्ठानवसेन[2] **सीहळ**दीपे मेव[3] दस्सेति। वुत्तं हि **जोतिसत्थेसु** देसन्तरा कम्माधिकारे[4] **उज्जयनि** बहुकालङ्का आरब्भ याव मेरुया याम्योत्तर रेखाति च लङ्कारमहिधरको[5] रवि रिवच्छवलम्पं[6] कोज्जयनि खदिस्सरञ्च हिमवा मेरूति पतिट्ठिता रेखाति च लङ्कालतविनट्ठाति[7] आदि च। रेखाति च अयनं वुच्चतीति। सिनेरु सीहळदीपे[8] मज्झनमन्तरं[9] कति योजन-पमाणन्ति आह तस्मा ति आदिं। तस्माति वुत्तमेवत्थं[10] हेतुभावेन पच्चामसति। सिनेरुसन्तिके अन्तवीथितो अस्स दीपस्स मज्झं द्वीहि मासेहि गतत्ताति[11] अत्थो। **सीहळदीपस्स** मज्झतो पट्ठाय मेरुस्स अन्तरं अयनयोजनेन दुवेसतसहस्सानि तेत्तिंससहस्सानि[12] द्वेसतानि अट्ठारस योजनानि तीणि गावुतानि चाति विञ्ञेय्यन्ति अत्थो। चक्कवाळयोजनेन पन दुवे सतसहस्सानि सट्ठिसहस्सानि द्वेसतानि द्वेगावुतानि चाति अत्थो। **सीहळदीपे**[13] मज्झतो चक्कवाळपब्बतन्तरं कति योजनपमाणन्ति आह [**बो**[42]] चक्कवाळन्ति आदि। अस्स **सीहळदीपस्स** मज्झतो पट्ठाय चक्कवाळपब्बतस्स अन्तरं अयनयोजनेन[14] तीणि सतसहस्सानि वीससहस्सानि छसहस्सानि पञ्चेवसतानि छयोजनानि एकं गावुतञ्चाति विञ्ञेय्यन्ति अत्थो। सब्बत्थ सिनेरुचक्कवाळसद्देहि अवधिभावेन उपलक्खितब्बत्ता आकासविसेसो दट्ठब्बो। अतोयेव[15] एत्थ अयनयोजनमेव गहेतब्बं। चक्कवाळयोजनेन

---

[1] बो. अतिकुसलताय
[2] बो. पत्थानवसेन
[3] बो. सीहळदीपमेव
[4] टो. कम्माधिकाटे
[5] टो. म्योत्थरटे खासा च लङ्का सम्पहि धरचको
[6] टो. रविरवच्छिवलम्मं
[7] टो. विनट्ठाति
[8] टो. सीहळदीप
[9] टो. मज्झानमन्तरं
[10] बो. वुत्तमेव अत्थं
[11] बो. गताति
[12] बो. तीणि दससहस्सानि
[13] टो. सीहदीप
[14] टो. अययोजनेन
[15] टो. अयोयेवेत्थ

पन दुवे सतसहस्सानि नवुति सहस्सानि एकं सहस्सं पञ्चसतानि चतुवीसति योजनानि द्विगावुतानि चाति गहेतब्बो। दुब्बोधताय पन **गणिकजोतिसत्थेसु** आगतनयं न वित्थारयामाति।

तावतिंसभवनं असूरभवनं अवीचिमहानिरयो चाति एवमादीसु चक्कवाळयोजनं गहेतब्बं। असूरानं[1] कम्मपच्चयउतुसमुट्ठानो सिनेरुस्स हेट्ठिमत-[**टो**[214a]]-ले अन्तो भूमियं कुन्थकिपिल्लिकानं[2] विय योजनं[3] दससहस्सो एको विवरो पातुभवतीति **संयुत्तटीका**यं वुत्तं।

[**बो**[43]] **सीहळदीपो** पन सिनेरुयोजनेन योजनसतिको। अयनयोजनेन पन द्विसतिको। विदत्थिअधिकतिरतनपमाणयट्ठिया कत योजनेन[4] तियोजनसतिकोव होतीति। वुत्तं हि **सम्मोहविनोदनी**यं "तियोजनसतिके **तम्बपण्णि**दीपे सब्बसम्पत्ति-परिवारं रज्जं अलभित्थाति"।[5]

[उप्पत्तिविनिच्छयो निट्ठितो।]

[निगमन-कथा]

अहं द्वादस वस्सानि, नभे चक्कपरिब्भमे।
गहनक्खत्ताचारेसु, अक्खायनत्थमानिय[6]।। 31।।
जोतिसत्थतिबेदेसु[7], पाळियट्ठकथादीसु।
युत्तमानिय चन्द-सुरियगतिविनिच्छयं।। 32।।

---

[1] बो. असूरानि पन
[2] टो. कुन्दकिपिल्लिकानं
[3] बो. योजन
[4] बो. + पन
[5] विभ.अट्ठ. 418. सचे चक्खुविकलो नाभविस्सा तियोजनसतिके सकलतम्बपण्णिदीपे सब्बसम्पत्तिपरिवारं रज्जं अलभिस्सा।
[6] बो. अक्खायनेत्थमानि ये
[7] बो. जोतिसत्थे

करोमि मन्दबुद्धिनं, हितायचत्थबोधिया[1]।
पुञ्ञेननेन[2] तारेस्सं, सदेवकं अनागते।। 33।।
[बो44] दुज्जहेस्सं[3] दुज्जनेहि, पग्गहिस्सामि सुजने।
चक्खुहृदयमंसादि- सरिरिं[4] अत्थिकेजने[5]।। 34।।
नेत्थतो[6] लोभकोधेहि, इस्सा मच्छरियादीहि।
हेस्सं मज्झिमदेसम्हि, विप्पराजकुले वरे[7]।। 35।।

इति परमसद्धाचारबुद्धिविरियपटिमण्डितेन **उत्तमङ्गो**ति गुरुहि[8] कत दहर-नामाभिधेय्येन अत्तनी[9] च वुत्तिना **तम्मर**नामदेसम्हि[10] अतिकित्तित नामानं द्विन्नंपि अग्गराजूनं आचरियभूतेन तीसु **बेदेसु** कोविदेन अत्तहितेसिनो[11] **तिपिटक**महाथेरेन विरचितं **चन्दसुरियगतिविनिच्छयं** नाम पकरणं सुनिट्ठितन्ति **[बो44][12]**।

मोहनज्झोतं अन्धं, पजं सद्धम्मरंसिना।
जोतयित्वान पायेमि, नवलोकुत्तरामतं।। 36।।
राजानो धम्मिका होन्तु, समादेवो पवस्सतु।

---

[1] बो. हितायचत्तबोधिया
[2] लौ. पुण्णेननेन
[3] बो. दुग्गहेस्सं
[4] टो. चक्खुहृदयमासादिसरियं
[5] बो. अत्थि ते धने
[6] लौ. हेट्ठतो
[7] लौ. वरेति
[8] बो. गरुहि
[9] लौ. अत्थनी
[10] बो. तम्बरा?
[11] लौ. अत्थहितेसिनो
[12] बो. का पाठ यही समाप्त होता है।

अवेरा सुमना चत्ता, सुखं पप्पोन्तु निब्बूति।। 37।।
केचि विनयटीकाय, अधिप्पायमजानतो।
आरोपेन्ति बहुदोसे, विनासेन्तुमिदंकरे।। 38।।

सक्कराज् 1292 खुप्रासिुल्लछन्ः 11 रक् तनङ्गन्बेने॰त्बङ् चन्दासूरियगतिदीपनी-पाळिकिुरेः य़ुए कूय़ुए प्रीःइ।[1]

निब्बानपच्चयो होतु। [टो214a]

[1] သက္ကရာဇ် ၁၂၉၂ ခုပြာသိုလ်လဆန်း ၁၁ ရက် တနင်္ဂနွေနေ့တွင် စန္ဒာသူရိယဂတိဒီပနီပါဠိကိုရေးရ၍ကူးရ၍ပြီး၏.
सक्कराज 1292 की अमावस्या के 11वें दिन रविवार को (29 दिसम्बर, 1930) चन्दसुरियगतिदीपनी पालि लिखी गई और प्रतिलिपिकरण की गई।

UPT538.3_Candasūriyagatidīpanī

203a

203b

204a

204b

UPT538.3_Candasūriyagatidīpanī

205a

205b

206a

206b

UPT538.3_Candasūriyagatidīpanī

207a

207b

208a

208b

UPT538.3_Candasūriyagatidīpanī

209a

209b

210a

210b

UPT538.3_Candasūriyagatidīpanī

211a

211b

212a

212b

213a

213b

214a